जंगल-कथा

उरुगुवाई बाल कहानियाँ



ओरासियो किरोगा

हिन्दी अनुवाद

प्रीति पंत

जंगल-कथा

उरुगुवाई बाल कहानियाँ

ओरासियो किरोगा

हिन्दी अनुवाद

प्रीति पंत

चित्रकार

नेल्सन रोमेरो

साहित्य अकादेमी

भारत स्थित उरुगुवाई दूतावास

Jungal Katha: Hindi translation by Preeti Pant of Spanish short stories for children by Horacio Quiroga. Sahitya Akademi, New Delhi and Embassy of Uruguay (2012) ₹40

प्रथम संस्करण: 2008
पुनर्मुद्रण: 2008, 2009, 2011 एवं 2012

साहित्य अकादेमी
मुख्य कार्यालय : रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई 400 014
सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळूरु 560 001
4 डी. एल. खान मार्ग, कोलकाता 700 025

चेन्नई कार्यालय
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443(304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई 600 018

भारत स्थित उरुगुवाई दूतावास
ए 16/2, वसंत विहार, नई दिल्ली 110 057
ई–मेल: uruind@del13.vsnl.net.in

ISBN: 81-260-2555-8
मूल्य: चालीस रूपए

Website: http://www.sahitya-akademi.gov.in
E-mail: sahityaakademisale@yahoo.com

मुद्रक: स्वास्तिक ऑफ़सेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली।

प्राक्कथन

लेखन कोई बच्चों का खेल नहीं और ख़ासकर बच्चों के लिए लिखना तो बिलकुल भी नहीं। यह शायद इसलिए है, क्योंकि प्रायः हम बड़े यह सोच लेते हैं कि बच्चे हैं तो हमारे ही बराबर, बेशक आकार में छोटे लगते हों। या फिर हम यह सोच लेते हैं कि वे हमसे इतने अलग हैं कि उन्हें हमारी आधी बातें समझ ही नहीं आती हैं।

हम अक्सर यह भूल जाते हैं कि बच्चे अपने व्यक्तित्व के विकासशील दौर में भी ख़ासी समझ-बूझ और परख रखते हैं।

हम बड़ों को हमेशा ही यही लगता है कि अनुभव के अभाव में वे संसार की उथल-पुथल को समझने में अक्षम हैं और उन्हें इन सबसे बचाने के प्रयास में हम उन्हें संसार से ही दो-चार नहीं होने देते।

सच तो यह है कि हमारे बच्चे हर पल इस संसार को जान रहे हैं और पहचान भी रहे हैं। ऐसे में हमारा उन्हें इस तरह संसार से अनजान रखना ठीक नहीं है।

प्रस्तुत कथाओं का एक ध्येय यह भी है कि बच्चों के सामने संसार की वास्तविकताएँ प्रस्तुत की जाएँ। उसकी अच्छाइयाँ, बुराइयाँ, क्रूरता, सरलता, रूखापन, दोस्ती और सबसे ज़रूरी वह दोस्ती जो प्रकृति, मनुष्य और जानवर के बीच होती है।

भारतवर्ष के बच्चों और उन बड़ों को जिन्हें बच्चों को कहानियाँ सुनाना अच्छा लगता है, वन कथाओं का यह अनुवाद प्रस्तुत करते हुए भारत स्थित उरुगुवाई दूतावास को हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

मैं साहित्य अकादेमी का इस किताब के संपादन के लिए, श्रीमती प्रीति पंत का मन व लगन से किए गए अनुवाद के लिए, श्री आर्क आल्वारो सिरिल्यो दे त्रासोस उइ का उनके सुझाव के लिए, जिससे चित्रकार को इस संस्करण में सम्मिलित किया गया, श्री नेल्सन रोमेरो को उनके रंग एवं ऊर्जा से परिपूर्ण चित्रों के लिए, प्रोफ़ेसर लेओनार्दो गारेत का वह पहला क़दम बढ़ाने के लिए, जिसके कारण यह कार्य शुरू हुआ, बहुत आभार प्रकट करना चाहती हूँ।

व्यक्तिगत रूप से मैं विदेश मंत्रालय एवं सांस्कृतिक विभाग, उरुगुवाई सरकार का भी इस कार्य में सहयोग के लिए धन्यवाद करती हूँ।

–इमेल्दा स्मोल्चिक
चार्ज द एफ़ेयर
उरुगुवाई दूतावास, नई दिल्ली

परिचय

भारत के नन्हे पाठको, आप ओरासियो किरोगा की इन कहानियों को पढ़ पा रहे हैं, यह इस बात का संकेत है कि हम एक नई दुनिया का निर्माण कर सकते हैं। यह दुनिया उन विचारों से जन्म लेगी, जो कि तब बनते हैं, जब हम अपनी कल्पनाओं में एक-दूसरे से मिलते हैं और उन्हें एक-दूसरे के साथ बाँट लेते हैं। ओरासियो किरोगा दक्षिण अमरीका के उरुगुवाई नामक छोटे से देश से थे। एक ऐसा नूतन देश, जिसका जन्म सन 1825 में हुआ और जहाँ की आबादी 30 लाख है। वे एक ऐसी सभ्यता के उत्तराधिकारी हैं, जो इस विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में मानी जाती है और जिसकी सोच एवं संस्कृति को हम, उरुगुवाई, संसार भर में अनोखा मानते हैं और उसका बड़ा आदर करते हैं।

यह बड़ी ही ख़ुशी की बात है कि हम इस किताब के ज़रिए पास आए हैं। मेरा जन्म भी उसी शहर में हुआ था, जहाँ ओरासियो किरोगा का जन्म हुआ था। उस शहर का नाम साल्तो है। यह एक प्यारी-सी नदी के किनारे बसा है, जिसका नाम उरुगुवाई है। उरुगुवाई का अर्थ है–रँगे पंछियों की नदी। किरोगा का जन्म सन 1878 में हुआ। उन्होंने अपना प्रारंभिक जीवन साल्तो में और उरुगुवाई एवं अर्जेण्टीना की राजधानियों में बिताया। रोमांच का आकर्षण उन्हें एक ऐसी जगह ले गया, जो शहरी जीवन से बहुत दूर था। वह था जंगल, जहाँ बहुत कम लोग रहते थे, जो लकड़ियाँ काटकर अपना गुज़ारा करते थे। वहाँ एक पहाड़ी पर पराना नदी के किनारे मिसियोनेस में उन्होंने अपना घर बनाया। वे वहाँ अपनी पत्नी के साथ रहने चले गए और वहीं अपने दोनों बच्चों को पाला और पढ़ाया। उन्होंने वहाँ जानवरों के साथ मेल से रहना सीखा और ये कहानियाँ लिखीं, जिन्हें अब आप पढ़नेवाले हैं।

किरोगा एक महान लेखक के रूप में प्रसिद्ध हुए और उन्हें कहानियों के राजा के नाम से जाना गया। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं–*कुएन्तोस दे आमोर दे लोकूरा इ दे मुएर्ते, आनाकोण्डा, एल देसिएर्तो* और *लोस देसतेर्रादोस*। लेकिन जो बात हमारे लिए सबसे ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है, वह यह है कि वे दक्षिण अमरीका के पहले ऐसे लेखक थे, जिन्होंने बच्चों के लिए कहानियाँ लिखीं। शायद वे इन्हें अपने बच्चों को तब सुनाया करते होंगे, जब साँझ ढले, दिनभर के शिकार एवं आलू इत्यादि की खेती के

बाद, खजूर के पौधों के लिए ताज़ा तैयार किए गए गड्ढों को वे वहाँ से बैठे देखते होंगे, जहाँ से पथरीली पहाडी पर से नीचे खाई में सिमटी हुई पराना नदी बहती दिखाई देती होगी।

हम जब इन जंगल कथाओं को पढ़ते हैं, यदि आप नक़्शे में देखेंगे तो पाएँगे, यह जगह वहाँ से बहुत दूर है, जहाँ आप हैं। विशाल कछुआ, गंजा तोता, अंधी हिरनी, आलसी मधुमक्खी वग़ैरह के बारे में पढ़कर हम सभी को बड़ा मज़ा आता है।

ओरासियो किरोगा का निधन 1937 में हो गया, लेकिन आज भी हम उन्हें वैसे ही चाहते हैं, जैसे कि वे अब भी हमारे बीच हों। वे हमें हमेशा उन बातों की याद दिलाते हैं, जो कि जीवन का मूल हैं। वे हमें सच्चाई और दोस्ती का महत्त्व याद दिलाते हैं। मैं संसार के इस कोने से आप सभी को अपना ढेर सारा प्यार विशाल कछुए की पीठ पर लादकर भेज रहा हूँ।

—लेओनार्दो गारेत

साल्तो, उरुगुवाई
फ़रवरी 2006

अनुक्रम

विशाल कछुआ

एक बार की बात है। बुएनोस आइरेस शहर में एक आदमी रहा करता था। वह बहुत मेहनती था और अपने आप में संतुष्ट था। लेकिन एक दिन वह बीमार पड़ गया। सभी डॉक्टरों की यही राय थी कि वह ठीक होने के लिए खुले प्राकृतिक वातावरण में जाकर रहे। पर वह नहीं जाना चाहता था, क्योंकि उसके छोटे-छोटे भाई-बहन उस पर निर्भर थे। इस कारण से वह और बीमार होता चला गया।

एक दिन उसके एक दोस्त ने जो चिड़ियाघर का निर्देशक था, उससे कहा, "आप मेरे मित्र हैं, और अच्छे और कर्मठ इंसान भी हैं। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप पहाड़ों पर रहने चले जाएँ, जहाँ हवा खुली एवं स्वच्छ होती है। आप बंदूक़ से निशाना बहुत अच्छा लगाते हैं। आप पहाड़ों से शिकार कर हमारे लिए जानवरों के सींग ला सकते हैं। बदले में मैं आपको पहले ही रुपये दे दूँगा, जिससे आपके छोटे भाई-बहन ठीक तरह रह सकें।"

आदमी ने अपने निर्देशक मित्र की बात मान ली और पहाड़ों पर रहने चला गया। वह मिसियोनेस शहर से भी दूर चला गया। वहाँ ख़ूब गर्मी पड़ती थी, जो उसके स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा था।

वह अकेला ही जंगल में रहता था और अपना भोजन खुद ही बनाया करता था। वह पहाड़ी जानवरों एवं पंछियों का शिकार कर उन्हें खाता और उसके बाद फल खाता था। पेड़ों की छाँव में सोता था और जब मौसम ख़राब होता तो झटपट मिनट भर में ताड़ एवं नारियल के चौड़े-चौड़े पत्तों से छप्पर तैयार कर लेता। फिर वहीं जंगल के बीचोंबीच बैठा बीड़ी सुलगा बड़े संतोष से हवा और पानी का तांडव देखता।

उसने जानवरों के सींगों का एक गुच्छा बना लिया था, जिसे वह अपने कंधे पर लादकर चलता था। उसने साथ ही बहुत से जीवित साँप भी पकड़ रखे थे, जिन्हें वह एक बड़े से लौकी के खोल में रखता था। उसके चेहरे पर फिर रंगत आ गई थी, वह स्वस्थ हो गया था और उसे अब अच्छी भूख भी लगती थी।

एक बार की बात है। दो दिन से कोई शिकार हाथ नहीं लगा था और वह बहुत भूखा था। तब एक बड़ी-सी झील के किनारे उसने एक बहुत बड़ा शेर देखा, जो एक कछुए को खाना चाहता था। उसने कछुए को एक पैर से रोक रखा था और दूसरा पैर कवच के भीतर डाल अपने नाख़ूनों

से उसे नोच खाना चाहता था। जैसे ही शेर ने उस आदमी को देखा, उसने एक भयंकर दहाड़ मारी और उसपर लपका, लेकिन वह शिकारी बढ़िया निशानेबाज़ था। उसने ठीक आँखों के बीच निशाना लगाकर एक ही गोली से शेर का सिर छेद दिया और वह ढेर हो गया। फिर उसने उसकी खाल निकाली, जो इतनी बड़ी थी कि पूरे एक कमरे के फ़र्श पर ग़लीचों के काम आ सकती थी।

अब वह आदमी बोला, "मैं कछुआ खाऊँगा, इसका मांस तो बहुत स्वादिष्ट होता है।"

पर जब वह कछुए के पास गया तो उसने देखा कि कछुआ तो पहले से ही ज़ख़्मी था। उसका सिर गर्दन से अलग हो रहा था और केवल मांस के तीन तारों से जुड़ा एक तरफ़ को झूल रहा था।

भूखे होने के बावजूद उस आदमी को बेचारे कछुआ पर दया आ गई। वह उसे घसीटता हुआ अपने झोंपड़े तक ले गया। वहाँ उसने उसके सिर पर पट्टी बाँध दी। उसके पास केवल एक ही क़मीज़ थी, जिसकी उसने पट्टियाँ बनाईं और बाँध दीं। उसके पास कोई और साधन नहीं था, इसलिए उसे कछुए को घसीटकर ले जाना पड़ा। वह बहुत विशालाकाय था। कुर्सी जितना ऊँचा और एक आदमी जितना भारी था।

कछुआ वहीं एक कोने में पड़ा रहा और कई दिनों तक हिला नहीं। आदमी रोज़ उसकी मरहम पट्टी करता और फिर उसकी पीठ को हाथ से थपथपाता।

अंत में कछुआ अच्छा हो गया, लेकिन अबकी बार आदमी बीमार पड़ गया। उसे ख़ूब बुख़ार चढ़ गया और सारा शरीर दर्द से टूटने लगा।

उसके लिए उठना भी मुश्किल हो गया। बुख़ार निरंतर बढ़ता ही जाता था और इतनी प्यास लगती थी कि गला जलने लगता था। तब उसे समझ में आया कि वह बहुत ज़्यादा बीमार है और वह ज़ोर से बोल उठा।

"अब मैं नहीं बचूँगा...मैं अकेला हूँ और उठ भी नहीं सकता हूँ और यहाँ कोई भी नहीं है, जो मुझे पानी ही पिला दे। मैं यहाँ भूख और प्यास से मर जाऊँगा।" थोड़ी ही देर में बुख़ार और तेज़ हो गया और वह बेहोश हो गया।

लेकिन कछुए ने यह सब सुन लिया था और जो कुछ शिकारी कह रहा था, उसकी समझ में भी आ गया था। उसने सोचा, 'इस आदमी ने उस बार मुझे नहीं खाया था, जबकि उसे बहुत ज़ोर की भूख भी लगी थी, और उसपर से मेरा इलाज भी किया था। अब मैं इसे ठीक करूँगा।'

तब वह झील के पास गया। उसने एक छोटे कछुए का कवच खोजा, फिर उसे अच्छी तरह से रेत और राख से साफ़ किया और उसमें पानी भरकर आदमी को दिया। वह अपने कंबल पर लेटा प्यास से मरा जा रहा था। फिर वह स्वादिष्ट जड़ों और नर्म बूटियों की खोज में जुट गया, जिन्हें वह आदमी के पास ले जाता, ताकि वह खा सके। आदमी सब खा लेता, लेकिन बग़ैर जाने कि कौन इसे खिला रहा था, क्योंकि वह कुछ भी जान-पहचान नहीं पाता था।



हर सुबह, कछुआ सारी पहाड़ी पर घूम-घूमकर आदमी के लिए बढ़िया से बढ़िया जड़ें खोजता, लेकिन उसे इस बात का बड़ा दुःख रहता कि वह पेड़ पर चढ़कर उसके लिए अच्छे अच्छे फल नहीं ले जा सकता था।

इसी तरह शिकारी कई दिनों तक खाता रहा बग़ैर जाने कि कौन उसे खिला रहा है। फिर एक दिन उसे होश आया। उसने चारों ओर देखा और पाया कि वह अकेला है। वहाँ उसके सिवा और कोई न था, बस वह कछुआ था, जो एक जानवर है। वह ज़ोर से बोल पड़ा, "मैं तो जंगल में अकेला हूँ। बुख़ार दोबारा चढ़ जाएगा और मैं यहीं मर जाऊँगा, क्योंकि मेरे मर्ज़ की दवा तो केवल बुएनोस आइरेस शहर में ही है। पर मैं वहाँ तक कभी न जा पाऊँगा और यहीं मर जाऊँगा।"

जैसा कि उसने कहा था, उस शाम बुख़ार फिर पहले से भी तेज़ चढ़ आया और वह बेहोश हो गया।

इस बार फिर कछुए ने उसकी बात सुन ली थी और वह बोला, "यदि यह यहीं रहा तो मर जाएगा; क्योंकि यहाँ इसका इलाज नहीं हो सकता है। मुझे इसे बुएनोस आइरेस ले जाना ही होगा।"

यह कह उसने पतली मज़बूत लताएँ काटीं। बहुत ध्यान से आदमी को अपनी पीठ पर लिटाया और उसे अच्छी तरह उन लताओं से बाँध दिया, ताकि वह गिर न जाए। फिर बड़ी जुगत से उसने उसकी बंदूक़, छालों का गुच्छा और साँपों की टोकरी को भी अपनी पीठ पर टिकाया और फिर सब अच्छी तरह से सँभाल लेने के बाद बिना शिकारी को भनक पड़े, वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ा।

कछुआ इस तरह लदे हुए चलता गया, चलता गया दिन-रात चलता चला गया। पहाड़ों-मैदानों को पार करता, चौड़ी नदियों को तैरकर पार करता, दलदल में किसी तरह डूब-डूबकर भी उस बेहोश आदमी को लादे पार करता गया। आठ-दस घंटे चलने के बाद वह कुछ देर रुकता, बंधनों को खोलता और बड़े ध्यान से आदमी को किसी सूखी, अच्छी घास पर लिटाता।

फिर वह पानी और नर्म जड़ें खोजने निकल पड़ता और लाकर बीमार आदमी को खिलाता। वह खुद भी खाता, लेकिन इतना थक जाया करता कि खाने के बजाय सो जाना ही उसे बेहतर लगता।

कभी-कभी उसे कड़ी धूप में चलना पड़ता। गर्मियों के दिन थे। शिकारी बुख़ार से बेहोश हो जाता और फिर प्यास से व्याकुल हो उठ जाता। रह-रहकर चिल्ला उठता—पानी! पानी! और हर बार कछुए को उसे पानी पिलाना पड़ता।

इस तरह वह दिनों-दिन हफ़्ते दर हफ़्ते चलता रहा। हर रोज़ वे बुएनोस आइरेस के नज़दीक आते जा रहे थे। साथ ही हर दिन कछुआ कमज़ोर भी होता जा रहा था। हर दिन उसकी ताक़त कम हो रही थी, तब भी वह कभी शिकायत न करता था। कभी-कभी थकान इतनी बढ़ जाती कि वह फिर न हिल पाता और तब आदमी क्षण भर को चेत जाता और कराह उठता।

"अब न बचूँगा। मैं पल पल और बीमार होता जाता हूँ। केवल बुएनोस आइरेस में ही मेरा इलाज हो सकता है। पर मैं यहीं मर जाऊँगा। अकेला इसी पहाड़ी पर।"

वह यही सोचता था कि वह उसी झोंपड़ी में पड़ा है, क्योंकि उसे तो किसी भी चीज़ की सुध न थी। तब कछुआ फिर ज़ोर लगाकर उठ पड़ता और चलने लगता।

लेकिन एक दिन ऐसा आया कि शाम ढले बेचारे कछुए की हिम्मत ने जवाब दे दिया। वह बुरी तरह थक चुका था और इससे ज़्यादा दम अब नहीं लगा सकता था। उसने हफ़्ते भर से कुछ नहीं खाया था, क्योंकि वह जल्दी पहुँच जाना चाहता था। अब उसमें कुछ भी करने की शक्ति नहीं रह गई थी।

जब पूरी तरह से रात हो चुकी थी, तब दूर क्षितिज पर उसे रोशनी दिखाई दी। एक ऐसी चमक, जिससे वहाँ का आकाश भी जगमगा रहा था। वह नहीं जानता था कि वहाँ क्या है? उसकी थकान बढ़ती ही जा रही थी। तब उसने अपनी आँखे मूँद लीं और उसे लगा कि वह शिकारी के साथ वहीं दम तोड़ देगा। वह दुःखी मन से यही सोच रहा था कि वह उस आदमी को नहीं बचा पाया, जिसने उसके साथ भला किया था।

वह नहीं जानता था कि वह बुएनोस आइरेस पहुँच चुका था। वह रोशनी, जो उसने आकाश में जगमगाती देखी थी, वह शहर की ही चकाचौंध थी; और वह तब मरने की सोच रहा, जब वह अपनी साहसी यात्रा के अंत पर पहुँच चुका था।

तब एक शहरी चूहा, शायद वही पेरेज चूहा,[1] उन दोनों अधमरे यात्रियों को मिला।

"अरे, क्या कछुआ है!" चूहा बोला, "मैंने तो कभी भी इतना बड़ा कछुआ नहीं देखा है और जो यह पीठ पर लादे ले जा रहा है यह क्या है? लकड़ियाँ?"

"नहीं।" कछुए ने उदासी से उत्तर दिया, "यह एक आदमी है।"

"और तुम इस आदमी के साथ कहाँ जा रहे हो?" जिज्ञासा से चूहे ने पूछा।

"जा रहा हूँ...जा रहा हूँ...जाना चाहता था बुएनोस आइरेस।" बेचारे हताश कछुए ने इतनी धीमी आवाज़ में उत्तर दिया कि सुनाई भी न पड़ती थी, "पर अब तो हम यहीं मर जाएँगे। कभी पहुँच नहीं पाएँगे।"

"अरे बुद्धू", कहकर चूहा हँस पड़ा, "मैंने कभी भी ऐसा बुद्धू कछुआ नहीं देखा। अरे तुम तो बुएनोस आइरेस पहुँच चुके हो। वह रोशनी जो देख रहे हो न, वह बुएनोस आइरेस ही तो है।"

यह सुन कछुए ने एक बार फिर ज़ोर लगाया, क्योंकि अब भी उसके पास शिकारी को बचाने का समय बाक़ी था। वह फिर राह पकड़ चल पड़ा।

अभी सुबह होने को थी कि चिड़ियाघर के निर्देशक ने एक बहुत कमज़ोर कछुए को आते देखा, जो अपनी पीठ पर बेलों से बँधे, एक ऐसे आदमी को ला रहा था, जो मरने को था। निर्देशक ने अपने मित्र को पहचान लिया और इलाज का इंतजाम करने के लिए दौड़ पड़ा। इलाज से शिकारी तुरंत ठीक हो गया।

---

1. पेरेज़ चूहा—स्पानी भाषी देशों में जब बच्चों के दाँत टूटते हैं तो उन्हें बताया जाता है कि यदि वे दाँत को अपने तकिये के नीचे रखकर सो जाएँगे तो रात में पेरेज़ चूहा आकर उसे ले जाएगा और बदले में कोई तोहफ़ा छोड़ जाएगा।

जब शिकारी ने यह जाना कि किस तरह कछुए ने उसे बचाया था, और किस तरह उसने तीन सौ मील की यात्रा तय की थी, ताकि उसका इलाज हो सके, तब उसने कछुए से कभी भी अलग न होने का फ़ैसला कर लिया। लेकिन वह उसे अपने घर में नहीं रख सकता था, क्योंकि उसका घर बहुत छोटा था। चिड़ियाघर के निर्देशक ने उसे अपने बाग़ में रहने की जगह दे दी और उसे अपने बच्चे की तरह पालने का ज़िम्मा ले लिया।

कछुआ खुशी-खुशी ख़ूब प्यार और दुलार के साथ सारा दिन बाग़ में घूमता है। वह वही विशालकाय कछुआ है, जिसे हम रोज़ बंदरों के पिंजरों के आस-पास घास खाते देखते हैं।

शिकारी रोज़ शाम उसे देखने जाता है और कछुआ भी उसके क़दमों की आहट से उसे पहचान लेता है। वे साथ-साथ दो-एक घंटे बिताते हैं और कछुआ उसे तब तक नहीं जाने देता है, जब तक वह प्यार से उसकी पीठ न थपथपा ले।

बगुलों की जुराबें

एक बार की बात है, वाइपर साँपों ने एक फिएस्ता यानी नाच-गाने का आयोजन किया। उन्होंने मेढक, डड्डुओं, बगुलों, घड़ियालों और मछलियों को बुलाया। मछलियाँ चलना नहीं जानती थीं, इसलिए नाच नहीं सकती थीं। नाच का आयोजन नदी किनारे किया गया था, इसलिए वे नदी किनारे उचककर रेत पर झाँक-झाँककर अपनी पूँछ से तालियाँ बजा रही थीं। घड़ियाल बड़ी मेहनत से सजकर आए थे। उन्होंने अपने गले में केलों की माला पहनी थी और वे पारागुआई सिगार पी रहे थे। डड्डुओं ने भी अपने सारे शरीर पर मछलियों की चोइयाँ[1] चिपकाई थीं और लहराते हुए यूँ चल रहे थे, मानो तैर रहे हों। जब जब वे नदी किनारे गंभीर-सा चेहरा बनाए गुज़रते, मछलियाँ चुटकियाँ ले-लेकर ख़ूब शोर मचाती थीं।

मेढक भी इत्र में नहाकर आए थे और पिछली टाँगों पर चल रहे थे। हर एक के गले में एक जुगनू लालटेन की तरह लटका टिमटिमा रहा था।

पर जो सबसे सुंदर लग रहे थे, वे थे साँप। सभी ने बैले डांसरों की-सी वेष-भूषा बनाई थी, जो उन्हीं के रंग से मेल खाती थी। रंग-बिरंगे साँपों ने रंग-बिरंगी जालीवाला घाघरा पहना था। जो हरे रंग के थे, उन्होंने हरी जाली! जो पीले रंग के थे, उन्होंने पीली जाली; और जो याराराा साँप थे, उन्होंने स्लेटी रंग का जालीदार घाघरा पहना था, जिस पर ईंट के चूरे और राख की धारियाँ रंगी गई थीं, क्योंकि उनका ख़ुद का रंग भी ऐसा ही होता है।

पर सबसे ज़्यादा कोरल वाइपर साँप ग़ज़ब ढा रहे थे। उन्होंने लंबी-लंबी लाल, सफ़ेद एवं काले आरगांजा की पोशाक पहनी थी और साँपोंवाला लहरिया नाच कर रहे थे। जब वाइपर साँप नाचते थे और अपनी पूँछ की छोर के ज़ोर पर चक्कर लगा लगाकर घूमते थे तो सभी मेहमान पागलों की तरह तालियाँ बजाते थे।

केवल बगुले, जिनकी टाँगें तब सफ़ेद रंग की हुआ करती थीं और जिनकी नाक, जैसी अब है वैसी ही तब भी मोटी और टेढ़ी होती थी, दुःखी थे। वह इसलिए कि उनमें अक़्ल थोड़ी कम होती

---

1. चोइयाँ—मछलियों की खाल पर एक कवच होता है, जो बहुत-सी छोटी-छोटी गोल पारदर्शी बिन्दियों से बना होता है। इन्हीं बिन्दियों को चोइयाँ कहते हैं।

है, जिस वजह से उन्हें सजने का कोई तरीक़ा सूझा ही नहीं था। उन्हें सभी की शानदार पोशाक देख देखकर जलन हो रही थी। सबसे ज़्यादा ईर्ष्या तो उन्हें कोरल वाइपरों से हो रही थी। जब भी कोई कोरल वाइपर मटकता-ठुमकता अपनी आरगांजा की पोशाक को लहराता हुआ उनके सामने से गुज़रता तो वे जल-भूनकर राख हो जाते थे।

तब ऐसे में एक बगुला बोला, "मैं जानता हूँ, हमें क्या करना चाहिए। हमें भी काली-सफ़ेद रंग-बिरंगी जुराबें पहननी चाहिए और तब देखना, यही कोरल वाइपर हम पर कैसे फिदा होते हैं।"

और सारे झुंड ने अपने पंख फैलाकर उड़ान भरी। वे नदी पार के गाँव की दुकान के दरवाज़े पर जा पहुँचे और—ठक-ठक—अपने पैरों से उन्होंने खटखटाया।

"कौन है?" दुकानदार ने पूछा।

"आपके पास सफ़ेद, काली, रंग-बिरंगी जुराबें हैं क्या?"

"नहीं, नहीं हैं।" दुकानदार ने जवाब दिया, "आपका दिमाग़ ख़राब हो गया है क्या? ऐसी जुराबें तो आपको कहीं भी नहीं मिलेंगी।"

तब वे दूसरी दुकान पर गए।

—ठक! ठक!

"क्या आपके पास सफ़ेद, काली, रंग-बिरंगी जुराबें हैं?"

दुकानदार ने जवाब दिया, "क्या कहा? सफ़ेद, काली, रंग-बिरंगी? नहीं ऐसी जुराबें तो कहीं भी नहीं होती हैं। आप सभी का दिमाग़ फिर गया है। हैं कौन आप?"

"हम बगुले हैं।" उन्होंने जवाब दिया।

वह आदमी बोला, "तब तो ज़रूर आप लोग पागल बगुले हैं।"

तब वे तीसरी दुकान पर गए।

—ठक! ठक!

"क्या आपके पास काली, सफेद, रंग-बिरंगी जुराबें हैं?"

दुकानदार ने चिल्लाकर पूछा, "किस रंग की? रंग-बिरंगी, काली-सफ़ेद? केवल तुम जैसे नुट-नकिया पक्षियों को ही ऐसी जुराबों की सूझ सकती है। भागो यहाँ से!" और उसने झाड़ू दिखाकर उन्हें वहाँ से भगा दिया।

इस तरह बेचारे बगुले सभी दुकानों में पूछ आए और सभी जगह से उन्हें पागल कहकर भगा दिया गया।

एक आर्माडिलोन पानी पीने नदी पर आया हुआ था। उसने उन्हें बेवक़ूफ़ बनाने की सोची और बड़े अंदाज से सलाम बजाते हुए कहा, "नमस्ते, प्यारे बगुले भाइयो! मैं जानता हूँ, आप लोग क्या खोज रहे हैं। ऐसी जुराबें तो आपको किसी भी दुकान पर नहीं मिलेंगी। शायद बुएनोस आइरेस में मिल जाएँ। पर वहाँ से तो डाक द्वारा मँगवानी पड़ेंगी। हाँ मेरी जो एक लेचूसा उल्लू भाभी हैं, उनके

पास ऐसी जुराबें ज़रूर हैं। उन्हीं से माँगकर क्यों नहीं देखते, वे आपको ज़रूर रंग-बिरंगी काली-सफ़ेद जुराबें दे सकती हैं।"

बगुलों ने उसका बड़ा धन्यवाद किया और उड़ते-उड़ते लेचूसा उल्लू की गुफा तक आ पहुँचे और बोले, "नमस्ते लेचूसा बहन! हम आपसे रंग-बिरंगी काली-सफेद जुराबें माँगने आए हैं। आज वाइपर साँपों के यहाँ जलसा है और वहाँ यदि हम ऐसी जुराबें पहनकर गए तो कोरल वाइपर साँप हम पर फ़िदा हो जाएँगे।"

"अरे क्यों नहीं, ज़रूर।" उल्लू ने जवाब दिया, "एक मिनट ठहरो, मैं अभी आई।"

और उड़ान भर, बगुलों को वहीं अकेला छोड़ गई। कुछ ही देर बाद वह जुराबों के साथ लौट आई। पर वे जुराबें थोड़े थीं? वे तो कोरल वाइपर साँपों की केंचुली थी। बहुत सुंदर नई उतारी हुई केंचुली, जो कि लेचूसा उल्लू ने कोरल वाइपर साँपों का शिकार कर उतारी थीं।

"यह रहीं जुराबें।" उल्लू ने उनसे कहा, "कोई चिन्ता की बात नहीं है, बस केवल इतना याद रहे कि तुम्हें सारी रात नाचते रहना होगा, बिना एक भी पल रुके चाहे पीठ पर, चोंच पर, या सिर के बल, पर बस नाचते ही जाना रुकना मत एक भी पल, क्योंकि यदि नाचना बंद किया तो फिर नाचने के बजाय रोना पड़ेगा।"

लेकिन बगुले तो बेचारे इतने सीधे होते हैं कि उनकी समझ में यह बात आई ही नहीं कि इस खेल में कितना ख़तरा था। वे तो ख़ुशी के मारे पागल हुए जा रहे थे।

उन्होंने कोरल वाइपर की नली या ट्यूब जैसी केंचुली को जुराब की तरह अपनी टाँगों में पहन लिया और ख़ुशी-ख़ुशी उड़ चले फिएस्ता में नाचने के लिए।

जब सभी ने उनकी वे सुंदर जुराबें देखीं तो सभी को उनसे ईर्ष्या होने लगी। वाइपर तो फिर केवल उन्हीं के साथ नाचना चाहते थे। बगुले एक पल के लिए भी अपनी टाँगें नहीं रोक सकते थे। बस नाचते ही चले जाते थे, इसलिए वाइपर यह देख ही नहीं पा रहे थे कि वे सुंदर जुराबें आख़िर बनी किस चीज़ की थीं।

लेकिन धीरे-धीरे वाइपरों को शक होने लगा। जब-जब बगुले उनकी बग़ल से नाचते हुए गुज़रते, वे ज़मीन तक झुक-झुककर देखने की कोशिश करते।

कोरल वाइपर तो ख़ास तौर से परेशान थे। वे पल भर के लिए भी उन जुराबों से नज़र नहीं हटा पा रहे थे और झुक-झुककर अपनी जीभ से टाँगों को छूने की कोशिश में लगे रहते थे। वाइपरों की जो जीभ होती है, वो इंसान के हाथों का काम देती है। पर बगुले तो बस बिना रुके नाचते ही चले जा रहे थे, बावजूद इसके कि वे बहुत थक चुके थे और अब और नहीं नाच सकते थे।

तब पल भर बाद ही एक बगुला, जो कि थककर चूर हो चुका था, अचानक एक घड़ियाल के सिगार से जा टकराया और लुढ़ककर मुँह के बल जा गिरा। झटपट कोरल वाइपर वहाँ दौड़ते हुए अपनी लालटेन लिए आ धमके और उस बगुले की टाँगों पर ज़ोरदार रौशनी कर दी।

और तब उन्होंने वे जुराबें देख ऐसी सीटी बजाई कि पाराना नदी के उस पार तक सुनाई दी।

"अरे ये तो जुराबें हैं ही नहीं!" वाइपर चिल्ला उठे, "अरे, हमें मालूम है, यह क्या है! धोखा हुआ है हमारे साथ! बगुलों ने हमारे ही भाइयों का शिकार कर उन्हें मारकर उनकी केंचुली को जुराबों की तरह पहन लिया है। जो जुराबें इन्होंने पहनी हैं, वे तो कोरल वाइपर की बनी हैं।"

यह सुनकर बगुले डर गए, क्योंकि उनकी पोल जो खुल चुकी थी। उन्होंने उड़ जाना चाहा, लेकिन वे इतने थक चुके थे कि एक पैर भी नहीं उठा पाए। तब कोरल वाइपर उन पर लपक पड़े और उनकी टाँगों से लिपटकर दाँतों से काट-काटकर जुराबों के चीथड़े-चीथड़े कर दिए, और बगुलों की टाँगों को भी इतनी ज़ोर से काटा कि वे अब मर ही जाते।

बेचारे बगुले दर्द से बौखलाए यहाँ से वहाँ दौड़ते थे, लेकिन कोरल वाइपरों की लपेट खुलती ही नहीं थी।

अंत में जब उन्होंने देखा कि जुराबों का एक भी टुकड़ा सलामत नहीं बचा है, तब ख़ुद थक चुके वाइपरों ने उन्हें छोड़ दिया और अपनी आरगांजा की पोशाक सँभालने लगे।

कोरल वाइपरों को इस बात का पक्का यक़ीन था कि बगुले अब जीवित नहीं बचेंगे, क्योंकि उन्हें काटनेवाले आधे से ज़्यादा कोरल वाइपर ज़हरीले थे।

लेकिन बगुले मरे नहीं। वे दर्द से बिलबिलाते-तड़पते हुए तेज़ी से पानी की ओर दौड़ गए। वे दर्द से चिल्लाते थे और उनकी टाँगें, जो कि सफ़ेद हुआ करती थीं, अब वाइपरों के ज़हर से लाल हो गई थीं। दिनों बीत गए, लेकिन उनकी टाँगों की जलन कम नहीं हुई। उनका रंग हमेशा लाल-लाल रहता था, क्योंकि उनमें ज़हर फैल चुका था।

टाँगों में फैले ज़हर के कारण ये पक्षी अब भी लगभग सारा दिन अपनी लाल टाँगें पानी में डुबाए रहते हैं, ताकि उनकी जलन कुछ तो कम हो।

कभी-कभी वे नदी से बाहर ज़मीन पर चलने का प्रयास करते हैं, ये देखने के लिए कि अब हाल कैसा है, किन्तु ज़हर के मारे दर्द फिर उठ पड़ता है और वे झटपट दौड़कर पानी में जा खड़े होते हैं। कभी-कभी तो जलन इतनी बढ़ जाती है कि वे एक टाँग को उठाकर अपने नीचे मोड़कर छिपा लेते हैं। फिर वे घंटों तक एक ही टाँग पर खड़े रहते हैं, क्योंकि फिर वे उसे सीधा जो नहीं कर पाते हैं।

तो यह थी कहानी फ़्लामेन्को बगुलों की, जिनकी टाँगें पहले सफ़ेद हुआ करती थीं, पर अब लाल होती हैं। सभी मछलियाँ यह जानती हैं कि ऐसा क्यों हैं। इसलिए वे उनका मज़ाक़ उड़ाती हैं लेकिन फ़्लामेन्को, जो पानी में अपने पैरों की जलन को ठीक करते रहते हैं, उन मछलियों से बदला लेने से बाज़ नहीं आते, इसलिए हर छोटी मछली, जो चिढ़ाने के इरादे से उनके ज़्यादा पास आ जाती है, वे उसे झट से खा जाते हैं।

पर शाम की दूधवाली चाय पर इस शानदार दोस्त को साथ लिए पहुँचेगा। वह ज़मीन के और क़रीब की एक शाख तक उड़ आया।

"घर पर मीठी मिर्ची।" पूरे दम से चिल्लाकर उसने दुहराया।

"और पास! मुझे सुनाई नहीं देता!" शेर ने अपनी भारी आवाज़ में जवाब दिया।

तोता और पास आकर बोला, "दूधवाली चाय मीठी!"

"और पास!" शेर ने दुहराया, बेचारा तोता और पास चला गया और तभी तपाक से शेर ने ऐसी छलाँग मारी, जो कि एक घर से भी ऊँची थी। और उसके पंजे के नाख़ून पेद्रीतो तक जा पहुँचे। वह इतना पास तो नहीं पहुँच पाया कि उसे मार सके, लेकिन उसने बेचारे तोते की पीठ से पूँछ तक के पंख ज़रूर नोच डाले। पेद्रीतो की पूँछ में एक भी पंख नहीं बचा।

"लो!" शेर बोला, "लो जाओ, अब जाकर दूध वाली चाय पियो!"

तोता दर्द और डर के मारे चीख़ता हुआ वहाँ से उड़ गया। पर वह ठीक से उड़ नहीं पा रहा था, क्योंकि उसकी पूँछ नहीं बची थी, जो कि चिड़ियों की गेयर की तरह होती है। वह हवा में लुढ़कता इधर से उधर डोलता हुआ उड़ता जा रहा था। रास्ते में मिलनेवाली सभी चिड़ियाँ इस अजीबोगरीब प्राणी को देखकर डर के मारे दूर भाग जाती थीं।

अंत में घर पहुँचते ही उसने सबसे पहले रसोइये के आइने में ख़ुद को देखा। बेचारा पेद्रीतो! वह इतना बदसूरत और अजीब पंछी लग रहा था, जैसा कि कभी किसी ने न देखा होगा। पूरा गंजा, एकदम नंगा और ठंड से काँपता हुआ। वह ऐसी हालत में चाय की मेज़ पर कैसे जा सकता था? तब वह डरकर एक नीलगिरी यूकलिप्टस के पेड़ की खोह में जा बैठा। वह एक गुफा-जैसी थी। पेद्रीतो उसके अंदर जाकर छिप गया, जहाँ वह ठंड और शर्म के मारे मरा जा रहा था।

इस सबके बीच चाय की मेज़ पर सभी उसे याद कर रहे थे। कहाँ होगा पेद्रीतो? वे उसे बुला रहे थे, "पेद्रीतो! मीठी मिर्ची पेद्रीतो, तुम्हारी मनपसंद दूधवाली चाय पेद्रीतो!"

लेकिन पेद्रीतो अपनी गुफा से टस से मस नहीं हुआ और ना ही उसने कोई जवाब दिया। बस चुपचाप पड़ा रहा। उन्होंने उसे कहाँ-कहाँ नहीं ढूँढ़ा, लेकिन तोता उन्हें नहीं मिला। तब सभी ने यही सोचा कि पेद्रीतो अब इस दुनिया में नहीं रहा।

हर शाम चाय के समय पर उन्हें तोते की बड़ी याद आती, और वे याद करते कि उसे दूधवाली चाय में ब्रेड डुबाकर खाना कितना अच्छा लगता था। बेचारा पेद्रीतो! अब कभी भी वे उसे देख नहीं पाएँगे, क्योंकि वह तो मर चुका था।

लेकिन पेद्रीतो मरा कहाँ था। वह तो अपनी गुफा में बैठा था, ताकि कोई उसे इस तरह नंगा न देखें। उसे अपनी चूहे-जैसे गंजी हालत पर बहुत शर्म आती थी। वह रात घिरने पर पेड़ से नीचे उतरता था, खाना खाकर फिर ऊपर चढ़ जाता था। भोर होते ही वह चुपचाप फिर नीचे उतरता था और जाकर रसोइये के आइने में ख़ुद को देखता था और हमेशा ही दुःखी होता था, क्योंकि उसके पंख बहुत धीरे-धीरे बढ़ रहे थे।



फिर एक दिन शाम को जब सारा परिवार चाय की मेज़ पर बैठा था, तब क्या दिखाई दिया? पेद्रीतो जी बड़े आराम से ऐसे डोलते हुए चले आ रहे थे, जैसे कुछ हुआ ही न हो। जब सभी ने उसे उन ख़ूबसूरत पंखों के साथ जीवित देखा तो उनकी ख़ुशी का ठिकाना न रहा।

"मिट्ठू तोते, पेद्रीतो!" वे बोल उठे, "तुम्हें क्या हो गया था पेद्रीतो! वाह, मिट्ठू मियाँ के पंख तो देखो, कैसे चमक रहे हैं!"

पर वे कहाँ जानते थे कि वे पंख तो नए थे। पेद्रीतो भी गंभीरता से खड़ा रहा और कुछ न बोला। वह बस दूधवाली चाय के साथ ब्रेड खाने लगा और बोलने के नाम पर तो उसने चूँ भी न की।

इसलिए जब अगली सुबह तोता फुर्र से उड़कर घर के मालिक के कंधे पर जा बैठा और ख़ूब चटर-पटर कर बोलने लगा तो मालिक को बड़ा आश्चर्य हुआ। दो मिनट में ही उसने सारा क़िस्सा कह सुनाया कि किस तरह वह पारागुआई तक चला गया, फिर वहाँ शेर से उसकी भेंट हुई वग़ैरह वग़ैरह। वह हर क़िस्से के अंत में यही गाता था कि –

और पेद्रीतो की दुम का एक पंख भी न बचा। एक भी नहीं! एक भी नहीं!

साथ ही उसने मालिक को यह भी सुझाया कि वे दोनों चलकर उस शेर का शिकार कर डालें।

घर का मालिक तब सोच ही रहा था कि उसे शेर की एक खाल ख़रीदने के लिए दुकान पर जाना चाहिए। वह इस सुझाव से बड़ा ख़ुश हुआ। इस तरह तो उसे वह खाल मुफ़्त में ही मिल जाएगी। घर लौटकर उसने अपनी बंदूक़ उठाई और निकल पड़ा पेद्रीतो के साथ पारागुआई की ओर।

उनके बीच यह तय हुआ कि जब पेद्रीतो को शेर नज़र आए तो वह उसका ध्यान बँटाने की कोशिश करेगा, ताकि मालिक धीरे से अपनी बंदूक़ समेत पास आ सके।

और हुआ भी ऐसा ही। तोता पेड़ की डाल पर बैठा चटर-पटर चटर-पटर बातें बनाता रहा और ... ही चारों तरफ़ नज़र घुमाकर देखता रहा कि कहीं शेर दिखाई तो नहीं दे रहा है। अंत में उसने ... टहनी टूटने की आवाज़ सुनी और अचानक पेड़ के नीचे देखा तो पाया कि दो हरी बत्तियाँ उस ... टिकी हुई हैं। वे तो शेर की आँखें थीं।

तब तोते ने चिल्लाना शुरू किया, "वाह क्या दिन है! मिट्ठू तोता! दूधवाली चाय मीठी! दूध ... चाय पियोगे!"

यह देखकर कि यह वही गंजा तोता था, जिसे वह मृत समझ बैठा था शेर का ख़ून खौल उठा। ... पंख फिर से बढ़िया उग आए थे। उसने ठान ली कि अबकी बार वह तोता उससे बच नहीं ... और उसकी आँखों में गुस्से की चिंगारियाँ जल उठीं। उसने अपनी गर्जन भरी आवाज़ में कहा, ... आओ! मैं बहरा हूँ!"

तोता उड़कर अगली डाल पर जा बैठा और रट लगाता रहा, "मीठी मिर्ची! इस पेड़ के नीचे

यह सुन, शेर ने दहाड़कर लंबी छलाँग मारी।

"किससे बात कर रहा है?" वह गरजकर बोला, "किससे कहा है तुमने कि मैं इस पेड़ के नीचे हूँ?"

"किसी से नहीं, किसी से नहीं!" तोता चिल्लाया, "हेल्लो पेद्रीतो! हेल्लो हेल्लो!"

और वह बातें बनाता डाल से डाल फुदकता पास आता गया।

जब उसने कहा था कि इस पेड़ के नीचे है, तब वह मालिक को आगाह करना चाहता था, जो कि तैनात हो बंदूक़ कंधे से लगाए दुबककर बैठा था।

अब तोता इतना पास आ गया था कि यदि और पास जाता तो सीधा शेर के मुँह में जा पहुँचता। वह चिल्लाया, "ख़बरदार!"

"और पास आओ!" शेर ने उछलने की तैयारी करते हुए दहाड़ा।

"चाय मीठी! देखो उछलनेवाला है!" और तभी शेर ने ऐसी छलाँग मारी कि तोते को तीर-सी तेज़ी के साथ उड़कर उसे चक़मा देना पड़ा। मालिक पेड़ के तले से टिककर बंदूक़ से निशाना साधे खड़ा था। ठीक उसी पल उसने घोड़ा दबाया और नौ कंचों जैसे बड़ी-बड़ी गोलियाँ दाग़ दीं, जो बिजली की-सी तेज़ी के साथ जाकर शेर के सीने में धँस गईं। शेर इतनी ज़ोर से दहाड़ा कि सारी पहाड़ी हिल गई और फिर गिरकर ढेर हो गया।

हमारे मिट्ठू मियाँ की तो ख़ुशी के मारे चीख़ें रुकती ही न थीं। वह ख़ुशी से फूला न समा रहा था, क्योंकि उसने अपना बदला जो ले लिया था और वह भी किससे! उस बुरे जानवर से, जिसने उसे गंजा कर दिया था।

आदमी भी बहुत ख़ुश था, क्योंकि शेर मारना बड़ा ही कठिन काम होता है और फिर अब बैठक के लिए उसके पास शेर की छाल भी आ गई थी।

जब वे घर लौट आए, तब सबको पता चल गया कि पेद्रीतो इतने समय तक क्यों पेड़ की खोह में छिपा रहा था और सभी ने उसकी बहादुरी की प्रशंसा की।

फिर वे बड़ी ख़ुशी-ख़ुशी रहने लगे। लेकिन तोता नहीं भूला कि शेर ने उसके साथ क्या किया था। हर शाम जब वह चाय के समय आता तो अंगीठी के सामने बिछाई गई शेर की खाल के पास जाकर उसे दूधवाली चाय पीने के लिए आमंत्रित करता।

"मीठी मिर्ची! दूधवाली चाय चाहिए? शेर के लिए मीठी मिर्ची।" सभी हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते और उनके साथ पेद्रीतो भी लोट-पोट हो जाता।

घड़ियालों की लड़ाई

एक रेगिस्तानी देश में, जहाँ इंसान ने क़दम भी नहीं रखा था, एक बहुत बड़ी नदी बहती थी, जिसमें बहुत-से घड़ियाल रहा करते थे। वे सौ से ज़्यादा या फिर हज़ार से भी ज़्यादा थे। वे मछलियाँ और नदी पर पानी पीने आए जानवरों को खाते थे। लेकिन आम तौर पर वे मछली ही खाते थे। नदी किनारे की रेत पर वे दोपहर में सुस्ताते थे और कभी कभी जब पूरी चाँदनी रात होती थी, तब वे पानी में खेला करते थे।

वे सभी बड़ी शांति से ख़ुशी-ख़ुशी रहा करते थे। एक दिन दोपहर ढले जब वे सुस्ता रहे थे, तब एक घड़ियाल अचानक जग पड़ा और उसने सिर उठाकर देखा। उसे लगा कि कहीं कोई आहट हुई है। उसने ध्यान से कान लगाकर सुना तो वाक़ई में दूर, बहुत दूर उसे एक दबी आवाज़ सुनाई दी। उसने अपनी बग़ल में सो रहे घड़ियाल को जगाया।

“उठो!” उसने कहा, “ख़तरा है।”

“क्या है?” दूसरे ने चौंककर पूछा।

“पता नहीं।” पहले घड़ियाल ने उत्तर दिया।

“मैंने एक अजीब आवाज़ सुनी है।” दूसरे ने भी वह आवाज़ सुनी और पल भर में ही उन्होंने सभी को जगा दिया। सभी डर के मारे दुम उठाए यहाँ-वहाँ दौड़ने लगे।

उनका डर बेवजह नहीं था, क्योंकि आवाज़ बढ़ती ही जा रही थी। जल्द ही उन्होंने दूर एक धुएँ का सा बादल देखा और छप-छप की आवाज़ सुनी, जैसे कि कोई दूर कहीं पानी पर तेज़-तेज़ तैरा करर रहा हो।

घड़ियाल एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। वह क्या हो सकता था?

उनमें एक बूढ़ा सयाना घड़ियाल था। वह उन सभी में सबसे बूढ़ा और सयाना था। वह इतना बूढ़ा था कि उसके मुँह में कुल दो ही दाँत साबुत रह गए थे। वह समुद्र तक यात्रा भी कर चुका था। वही अंत में बोला, “मुझे मालूम है वह क्या है! वह एक व्हेल मछली है। यह बहुत बड़ी होती है और सफ़ेद फेनदार पानी नाक के रास्ते उछालती है, जो कि पीछे की ओर जाकर गिरता है।”

यह सुन, जो छोटे-नन्हे घड़ियाल थे, वे भयभीत हो चिल्लाने लगे।

“वह व्हेल मछली है! वह आ रही है! व्हेल आ रही है!”

लेकिन बूढ़े घड़ियाल ने अपनी पूँछ से अपने सबसे पास खड़े घड़ियाल को फटकार लगाई।

"डरो मत!" वह ज़ोर से बोला, "मैं जानता हूँ, व्हेल मछली कैसी होती है! वह हम लोगों से डरती है। हमेशा डरती है।"

यह सुन छोटे घड़ियाल शांत हो गए। लेकिन उनका डर लौटते देर न लगी, क्योंकि जो स्लेटी रंग का धुआँ था, वह अचानक काले धुएँ में बदल गया। सभी ने फिर पानी पर छपाक-छपाक की आवाज़ सुनी, जो अब और तेज़ हो चुकी थी। घबराए घड़ियालों ने झट पानी में डुबकी मार ली और केवल उनकी आँखें और नाक की नोक पानी की सतह पर दिखती रही और इसी तरह डूबे हुए उन्होंने अपने आगे से गुज़रती वह विशालकाय चीज़ देखी, जो पहली बार उस नदी से गुज़र रही थी।

जहाज़ आगे से गुज़रता हुआ दूर चला गया और ग़ायब हो गया। तब सभी घड़ियाल पानी से बाहर निकले। वे बूढ़े घड़ियाल पर बहुत नाराज़ हुए, क्योंकि उसने यह कहकर कि वह व्हेल मछली है, उन सभी को धोखा दिया था।

"यह तो व्हेल नहीं है।" वह उसके कान में चिल्लाने लगे, क्योंकि वह कुछ ऊँचा सुनता था, "यह जो गुज़रा, वह क्या था?"

तब बूढ़े घड़ियाल ने उन्हें समझाया कि वह एक आग से लबालब जहाज़ था और यदि वह जहाज़ यूँ ही गुज़रने लगा तो वे सभी घड़ियाल जल्द ही मारे जाएँगे।

लेकिन वे सभी हँसने लगे, क्योंकि उन्हें लगा कि बूढ़ा घड़ियाल पगला गया है। यदि वह जहाज़ वहाँ से गुज़रने भी लगा तो वे भला क्यों मारे जाएँगे। बेचारा बूढ़ा घड़ियाल पक्का सठिया गया है!

अब उन्हें भूख लगी थी, इसलिए वे मछलियाँ खोजने लगे।

पर वहाँ एक भी मछली न थी। उन्हें ढूँढ़ने पर भी मछली न मिली। जहाज़ के शोर के कारण सभी न जाने कहाँ चली गई थीं। अब मछलियाँ बाक़ी न बची थीं।

"मैं न कहता था?" तब बूढ़ा घड़ियाल बोला, "अब हमारे पास खाने के लिए कुछ नहीं है, सब मछलियाँ चली गई हैं। कल तक इंतज़ार करते हैं। हो सकता है कि जहाज़ फिरा दोबारा न आए और मछलियाँ अपने डर से उबरकर फिर लौट आएँ।"

लेकिन अगले दिन फिर पानी में उन्होंने वही शोर सुना और उस जहाज़ को ख़ूब शोर करते हुए जाते देखा और इतना धुआँ छोड़ते देखा कि आसमान का रंग काला पड़ गया।

"लो भैया।" घड़ियालों ने कहा, "जहाज़ कल गुज़रा था, आज गुज़रा है और कल फिर यही होगा। अब न तो मछलियाँ मिलेंगी, न कोई जानवर ही पानी पीने आया करेंगे और हम भूख से मारे जाएँगे। चलो हम एक बाँध बनाएँ—हाँ हाँ बाँध बनाते हैं! बाँध!" सभी एक साथ चिल्ला उठे और तेज़-तेज़ नदी किनारे की ओर तैरने लगे, "चलो बाँध बनाएँ!"

झटपट वे बाँध बनाने में जुट गए। वे सभी जंगल में गए और उन्होंने दस हज़ार से ज़्यादा पेड़ गिरा दिए। जिनमें लापाचो ओर केब्राचो[1] पेड़ों की संख्या सबसे अधिक थी, क्योंकि इन पेड़ों की

1. लापाचो और केब्राचो—पेड़ों की प्रजाति।

लकड़ी बहुत मज़बूत होती है। उन्होंने अपने दुम के आरीनुमा दाँतों से पेड़ों की कटाई की, उन्हें ढकेलकर पानी तक ले गए और नदी की चौड़ाई पर उन्हें ठोक दिया। अब वहाँ से कोई जहाज़ नहीं गुज़र सकता था, न छोटा न बड़ा। उन्हें पूरा विश्वास था कि अब कोई भी मछलियों को डराने नहीं आ सकता था। वे अब थक चुके थे, इसलिए रेत पर लंबी तान कर सो गए।

अगले दिन भी वे सो ही रहे थे कि उन्होंने जहाज़ के छपा-छप की आवाज़ सुनी। सुना तो सभी ने लेकिन उठना तो दूर किसी ने आँखें तक न खोलीं। उन्हें क्या पड़ी थी? अब जितना चाहे उतना हल्ला कर ले, पर वहाँ से तो गुज़रना नामुमकिन ही था।

असल में जहाज़ तब दूर ही था, जब वह रुक गया। जो लोग उसके अंदर थे, उन्होंने दूरबीन से उस चीज़ को देखा, जो कि नदी की चौड़ाई पर बनी थी। उन्होंने एक छोटी नाव यह देखने के लिए भेजी कि वह था क्या, जो उनका रास्ता रोके था। तब घड़ियाल उठकर बाँध पर गए और लकड़ियों के बीच के छेदों से झोंककर इस बात पर हँसने लगे कि जहाज़ को क्या मात मिली है।

नाव ने पास आकर उस ज़बरदस्त बाँध को देखा जिसे घड़ियालों ने बनाया था और फिर वह जहाज़ की ओर लौट गई। लेकिन वह फिर बाँध पर लौट आई और उसपर बैठे आदमियों ने कहा, "अरे घड़ियालो!"

"क्या है?" घड़ियालों ने लकड़ियों के बीच से अपना सिर निकालते हुए जवाब दिया ।

"यह हमारे रास्ते में आ रहा है।" आदमियों ने कहा।

"हम जानते हैं।"

"हम गुज़र नहीं पा रहे हैं।"

"हम यही तो चाहते हैं।"

"बाँध हटाओ।"

"नहीं हटाएँगे।"

आदमियों ने आपस में धीमी आवाज़ में कुछ बातें कीं और फिर चिल्लाकर बोले, "घड़ियालो।"

"क्या है?" उन्होंने जवाब दिया

"नहीं हटाओगे?"

"नहीं।"

"ठीक है फिर, कल मिलेंगे।"

"जब चाहो, तब सही।"

और नाव वापस जहाज़ के पास लौट गई। घड़ियाल ख़ुशी से पानी में खूब उछल-उछलकर कलाबाज़ियाँ मारने लगे। अब कोई जहाज़ वहाँ से नहीं गुज़रनेवाला था और हमेशा ख़ूब सारी मछलियाँ होनेवाली थीं।

लेकिन अगले ही दिन जहाज़ फिर वापिस आ गया और जब घड़ियालों ने उसे देखा तो उनकी तो आश्चर्य से बोलती ही बंद हो गई; यह वही पुराना जहाज़ नहीं, बल्कि दूसरा चूहे के से रंग का

जहाज़ था, जो कि पिछले जहाज़ से कहीं बड़ा था। अब ये कौन-सा नया जहाज़ आ पहुँचा था? यह भी गुज़रना चाहता था क्या? नहीं, यह नहीं गुज़रनेवाला था! न तो यह, न दूसरा, न कोई और!

"नहीं! नहीं गुज़रने पाएगा।" घड़ियाल चिल्लाए और बाँध की ओर लपकते हुए हर एक ने अपनी जगह बल्लियों के बीच सँभाल ली।

यह नया जहाज़, पुराने जहाज़ की ही तरह बाँध से थोड़ी दूर पर ही रुक गया। न कोई बल्ली, न लकड़ी, न एक टुकड़ा ही बचा। सब का सब बारूद के गोलों से उड़ा दिया गया था और घड़ियाल पानी में डूबे केवल आँखें और नाक की नोक बाहर निकाले, जंगी जहाज़ को गुज़रते ज़ोरों की सीटी बजाकर निकलते देखते रह गए।

"तब जाकर घड़ियाल पानी से बाहर निकले और बोले, "चलो एक और बाँध बनाएँ जो पिछले से भी बड़ा और ज़्यादा मज़बूत हो।"

उसी शाम और उसी रात के भीतर उन्होंने बड़ी-बड़ी बल्लियों से एक और बाँध बना डाला। और फिर वे थककर चूर हो सो गए। वे अगले दिन ढले तक भी सो ही रहे थे, जब वह जंगी जहाज़ फिर आ धमका और इस बार वह बाँध के क़रीब आ गया।

"अरे ओ घड़ियालो!" अफ़सर ने ललकारा।

"क्या है?" घड़ियालों ने पूछा।

"इस दूसरे बाँध को हटाओ।"

"नहीं हटाएँगे।"

"हम इसे भी पिछलेवाले की तरह ही गोलों से उड़ा देंगे।"

"उड़ा लो, यदि उड़ा सको तो!"

वे इतने दंभ से इसलिए कह रहे थे, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि यह नया बाँध नहीं उड़ाया जा सकेगा। चाहे दुनिया भर के गोले ही क्यों न उस पर दाग़ दिए जाएँ।

लेकिन कुछ ही देर में वह जहाज़ फिर धुएँ से घिर गया और एक ज़ोरदार गर्जन के साथ एक गोला बाँध को ठीक बीचोंबीच से भेदता हुआ चला गया। इस बार जो दाग़ा गया था, वह ग्रेनेड बम था। वह बल्लियों को बीच से चीरता हुआ चला गया और उछालकर, फोड़कर उसने उनके भारी-भरकम पेड़ के तनों को चकनाचूर कर दिया। दूसरा ग्रेनेड पहले के ठीक बग़ल में आकर टकराया। फूटा और बाँध का एक और हिस्सा हवा में उड़ गया। इस तरह वे बाँध को तमाम करते चले गए। बाँध का नामोनिशान भी नहीं रहा। कुछ भी नहीं बचा। तब जंगी जहाज़ घड़ियालों के सामने से होते हुए गुज़रा और उन पर सवार लोग अपने मुँह हाथों से ढककर उन्हें चिढ़ाते गए।

"लो।" घड़ियालों ने पानी से निकलते हुए कहा, "अब तो हम सभी मारे जाएँगे, क्योंकि जहाज़ यूँ ही हमेशा गुज़रता रहेगा और मछलियाँ कभी लौट नहीं पाएँगी।"

वे बहुत हताश एवं उदास हुए। अब तो नन्हें घड़ियाल भूख से रोने भी लगे थे।



तब बूढ़े घड़ियाल ने कहा, "अब भी हमारे पास खुद को बचाने के लिए एक तरकीब बाक़ी है। चलो हम सुरूबी[1] से मिलने चलते हैं। मैं उसके साथ तब गया था, जब मैंने सागर तक यात्रा की थी। उसके पास एक तोरपेदो है। उसने दो जंगी जहाज़ों के बीच एक युद्ध देखा था और एक तोरपेदो जो फटा नहीं था, उसे वह यहाँ ले आया था। चलो हम उससे वह माँग लेते हैं। हालाँकि वह हम घड़ियालों से बहुत नाराज़ है, फिर भी वह दिल का अच्छा है, और कभी नहीं चाहेगा कि हम मारे जाएँ।"

बात यूँ थी कि बहुत साल पहले घड़ियालों ने सुरूबी के एक भतीजे को खा लिया था, और तब से वह घड़ियालों से कोई संबंध नहीं रखना चाहता था। लेकिन इस सब के बावजूद वे सुरूबी से मिलने सर पर पैर रखकर दौड़ते चले गए। वह पराना नदी के किनारे एक बड़ी-सी गुफा में रहता था। वह हमेशा ही अपने तोरपेदो को साथ रखकर सोता था। कई सुरूबी दो मीटर जितने लंबे भी होते हैं और यह तोरपेदो का मालिक जो सुरूबी था, उन्हीं में से एक था।

"अरे सुरूबी!" सभी घड़ियालों ने गुफा के दरवाज़े से आवाज़ लगाई। उस भतीजेवाली घटना के कारण किसी की भी हिम्मत नहीं थी कि वह भीतर जाए।

"कौन मुझे बुला रहा है?" सुरूबी ने पूछा।

"हम हैं, घड़ियाल!"

"मेरा तुम लोगों से न कोई लेना-देना है, न ही रखना चाहता हूँ।" सुरूबी ने उखड़ते हुए कहा। तब बूढ़ा घड़ियाल गुफा के भीतर बढ़ते हुए बोला, "सुरूबी, यह मैं हूँ! तुम्हारा दोस्त घड़ियाल, जो कि तुम्हारे साथ सागर की यात्रा पर गया था।"

उस जानी-पहचानी आवाज़ को सुन सुरूबी अपनी गुफा से बाहर निकला।

"अरे, मैंने तुम्हें पहचाना नहीं था।" उसने बड़े प्यार से अपने पुराने दोस्त से कहा, "क्या चाहते हो?"

"हम तुम्हारा तोरपेदो माँगने आए हैं। एक जंगी जहाज़ है, जो हमारी नदी से गुज़रता है और मछलियों को डरा देता है। हमने एक बाँध बनाया था, जो उसने एक साँस में ही तोड़ दिया। हमने दूसरा बनाया तो उसे भी तिनके की तरह उड़ा दिया। सभी मछलियाँ भाग गई हैं और हम भूख से मर रहे हैं। हमें वह तोरपेदो दे दो और हम उसे पलक झपकते ही उड़ा देंगे।"

सुरूबी यह सुनकर कुछ देर सोच में पड़ गया; और फिर बोला, "ठीक है। मैं आप लोगों को यह तोरपेदो दे दूँगा, लेकिन याद रहे, मैं भूलूँगा नहीं, जो आप लोगों ने मेरे भाई के बेटे के साथ किया था। यहाँ किसे तोरपेदो छोडना आता है?"

आता तो किसी को भी न था, इसलिए सब चुप्पी साधे खड़े रहे।

---

[1] सुरूबी–एक बड़ी मछली की प्रजाति।

"ठीक है।" सुरूबी ने गर्व महसूस करते हुए कहा, "तो फिर मैं ही छोड़ूँगा। मुझे यह काम आता है।"

तब उन्होंने यात्रा की तैयारी शुरू की। सभी घड़ियालों ने अपने आपको एक-दूसरे से बाँध लिया। एक की पूँछ से दूसरे की गर्दन और दूसरे की पूँछ से तीसरे की गर्दन, और इस तरह उन्होंने घड़ियालों की एक लंबी ज़ंजीर बना ली, जो लगभग मील भर लंबी थी। भारी-भरकम तोरपेदो को सुरूबी ने पानी के बहाव की ओर किया और ख़ुद को उसके नीचे टिका लिया, ताकि वह उसकी पीठ पर टिककर तैरता रहे। क्योंकि एक के पीछे एक लगे घड़ियालों की कड़ी का छोर आ गया, सुरूबी ने अंतिम छोर पर लगे घड़ियाल की दुम अपने दाँतों के बीच दबाई और रेल की तरह वे चल पड़े। सुरूबी तोरपेदो को सँभाले था और घड़ियाल नदी किनारे दौड़ते हुए उसे खींचते थे। चढ़ते-उतरते, पत्थरों पर कूदते वे लगातार दौड़ते हुए तोरपेदो को घसीटते हुए चल रहे थे, जो कि दौड़ की तेज़ रफ़्तार के कारण पानी में ऐसी लहरें उठा रहा था, जैसे कोई जहाज़ हो। अगले दिन सुबह ही वे वहाँ पहुचे, जहाँ उन्होंने आख़िरी बाँध बनाया था। पहुँचते ही वे एक नया बाँध बनाने के काम में जुट गए। लेकिन यह बाँध पिछले बाँधों से कहीं ज़्यादा तगड़ा था, क्योंकि सुरूबी के कहने पर उन्होंने पेड़ों के तनों को एक-दूसरे से सटाकर लगाया था। यह सचमुच एक ज़बरदस्त बाँध था।

बाँध पर अंतिम बल्ली लगाए उन्हें मुश्किल से घंटा भर हुआ होगा कि जंगी जहाज़ फिर दिखाई दिया। फिर छोटी नाव पर सवार अफ़सर और आठ नाविक बाँध के पास आए। घड़ियाल बल्लियों पर चढ़कर उस ओर झाँकने लगे।

"अरे घड़ियालो!" अफ़सर ने पुकारा।

"क्या है?" घड़ियालों ने जवाब में पूछा।

"फिर से बाँध?"

"हाँ! फिर नया बाँध।"

"हटाओ इस बाँध को।"

"कभी नहीं!"

"नहीं हटाओगे?"

"नहीं!"

"ठीक है तो सुनो।" अफ़सर बोला।

"हम इस बाँध को तहस-नहस कर देंगे और तुम लोग फिर दूसरा बनाने की हिम्मत न कर सको, इसलिए उसके बाद हम तुम्हें भी गोलों से उड़ा देंगे। एक भी ज़िन्दा नहीं बच पाएगा–न बड़ा, न छोटा, न मोटा, न पतला, न जवान, न बूढ़ा–इस बूढ़े घड़ियाल की तरह जिसे मैं देख रहा हूँ जिसके मुँह में कुल दो ही दाँत बाक़ी हैं।"

"क्या खाओगे बताओ।" नाविकों ने पूछा।

"इस अफ़सर के बच्चे को!" घड़ियाल ने जवाब दिया और झटपट बल्ली पर से उतर गया।

इतने में सुरूबी ने तोरपेदो को ठीक बाँध के बीचोबीच तैनात कर दिया था और चार छोटे घड़ियालों को आदेश दे दिया था कि वे उसे ध्यान से पकड़कर रखें ओर तब तक पानी की सतह के नीचे डुबाए रखें, जब तक की वह उन्हें इशारा न कर दे।

उन्होंने ऐसा ही किया। साथ ही बाक़ी के घड़ियालों ने भी नदी के किनारे-किनारे पानी में डुबकी लगा ली। सुरूबी अपने तोरपेदो की बग़ल में जा घुसा।

अचानक जंगी जहाज़ धुएँ से भर गया और उसने पहला बम दाग़ा बाँध पर। वह गोला ठीक बाँध के बीचोंबीच जा टकराया, जिससे दस बारह बल्लियाँ टुकड़े-टुकड़े हो हवा में उछल गईं।

लेकिन सुरूबी तैयार था। बाँध में छेद हुआ नहीं कि उसने पानी के नीचे तोरपेदो सँभाले उन चार घड़ियालों को आवाज़ लगाई, "तोरपेदो दाग़ दो! ढील दो और छोड़ो!"

घड़ियालों ने तोरपेदो को छोड़ा और वह पानी की सतह पर आ गया।

जितने में कोई कुछ कहता सुरूबी ने तोरपेदो तैयार भी कर लिया। बाँध में बने छेद के ठीक मुँह पर एक आँख से निशाना साधते हुए तोरपेदो की मशीन को चलाते हुए उसने उसे जहाज़ पर दाग़ दिया।

अब समय हो चुका था । ठीक उसी वक़्त जंगी जहाज़ अपना दूसरा गोला छोड़ने को था और वह ग्रेनेड बल्लियों के बीच विस्फोट कर बाँध के एक और हिस्से को उड़ा देनेवाला था।

लेकिन इतने में तोरपेदो जहाज़ की ओर निकल पड़ा। जो आदमी उस जहाज़ में थे, उन्होंने उसे देख लिया था; या फिर कहा जाए तो उन्होंने उस भँवर को देखा था, जो एक तोरपेदो की वजह से पानी में उठता है। वे डर के मारे ज़ोर से चीख़ पड़े और कोशिश में लग गए कि जहाज को हटा लिया जाए, ताकि तोरपेदो उसे न छूने पाए।

लेकिन तब तक देर हो चुकी थी, तोरपेदो पहुँचा और जाकर उस बड़े जहाज़ से ठीक बीचों बीच जा टकराया और फट गया।

जिस धमाके के साथ वह तोरपेदो फटा, उसकी तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। वह फटा और अपने साथ उसने जहाज़ के सैकड़ों टुकड़े कर दिए। मीटर-मीटर भर की दूरी पर चिमनियाँ उड़ती दिखाई दे रही थीं।

घड़ियाल खुशी के मारे ज़ोर से चिल्लाए और दौड़ते हुए बाँध के पास गए। वहाँ उन्होंने ग्रेनेड द्वारा बनाए गए छेद में से मृत और अब भी जीवित आदमियों को जाते देखा। वे नदी के बहाव के साथ बहते जा रहे थे।

घड़ियाल किनारे से लगी दो बल्लियों पर चढ़ गए और जाते हुए आदमियों को पैरों से मुँह ढँक कर चिढ़ाने लगे।

वे किसी भी आदमी को खाना नहीं चाहते थे, हालाँकि ग़लती आदमियों की ज़रूर थी। केवल एक आदमी, जो कि जीवित था और जिसने ढेर सारा सोना पहन रखा था, जब वहाँ से गुज़रा, तब बूढ़े घड़ियाल ने पानी में लपककर झट से दो ही बार में उसे खा लिया।

“यह कौन था?” एक छोटे भोले-भाले अनजान घड़ियाल ने पूछा।

“यही वह अफ़सर है।” सुरूबी. ने जवाब दिया। “मेरे बूढ़े दोस्त ने क़सम खाई थी कि वह उसे खा जाएगा और लो उसे खा भी गया।”

घड़ियालों ने बाक़ी के बाँध को अलग कर निकाल दिया, उसकी अब ज़रूरत भी नहीं थी। अब वहाँ से कोई जहाज़ नहीं गुज़रनेवाला था। सुरूबी का दिल उस अफ़सर की पेटी एवं फीतों पर आ गया था। इसलिए उसने कहा कि वे उसे दे दिए जाएँ। उन्हें बूढ़े घड़ियाल के दाँतों के साथ खींचा तानी करनी पड़ी, क्योंकि वे उनमें फँस जो गए थे। सुरूबी ने बेल्ट अपने नन्हे पंखों के नीचे बाँध ली और मूँछों के छोर से फीते लटका लिए। सुरूबी दिखता तो अच्छा ही है और उस पर बिखरे दाग़ों के कारण वह साँप की तरह भी लगता है, इसलिए वह घंटे भर तक घड़ियालों के आगे पीछे इतराता रहा और वे भी बड़े प्रभावित हो मुँह खोलकर उसे देखते ही रह गए।

घड़ियाल उसके साथ उसकी गुफा तक गए और उसका जी भर कर धन्यवाद किया। फिर वे अपने स्वर्ग में लौट आए। मछलियाँ भी लौट आईं और घड़ियाल खुशी-खुशी रहने लगे और अब तक रह रहे हैं, क्योंकि अब उन्हें आदत हो गई है, उन जहाज़ों को देखने की, जो कि संतरे लेकर जाते हैं।

लेकिन जंगी जहाज़ों का तो वे नाम भी नहीं सुनना चाहते।

अंधी हिरनी

एक बार की बात है, एक हिरनी थी—गामा हिरनी—जिसने दो जुड़वाँ बच्चों को जन्म दिया। गामा हिरनियों के बीच यह कोई आम बात नहीं थी। पहाड़ी बिल्ला उनमें से एक को खा गया और बची केवल नन्ही गामीता। बाक़ी हिरनियाँ उसे बहुत प्यार करती थीं और उसके पेट में गुदगुदी भी करती थीं।

सूरज की पहली किरण पड़ते ही उसकी माँ रोज़ उससे एक ही बात दोहराने को कहती थीं, "खाने से पहले पत्तियों को अच्छी तरह से सूँघ लेना चाहिए, क्योंकि कई पत्तियाँ ज़हरीली होती हैं।

"पानी पीने के लिए नदी में उतरने से पहले पानी को अच्छी तरह से देख लेना चाहिए, ताकि यक़ीन हो जाए कि घड़ियाल तो नहीं है।

"हर आधे घंटे में सिर उठाकर हवा को सूँघ लेना चाहिए, ताकि शेर की मौजूदगी का पता चल जाए।

"चारागाह में घास चरते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि घास में साँप तो नहीं छिपा है।"

बच्चो, हिरनों के यहाँ यही बातें सिखाई जाती हैं। जब नन्ही गामीता ने ये बातें सीख लीं, तब उसकी माँ ने उसे अकेले चरने की आज्ञा दे दी।

एक शाम जब नन्ही गामीता पहाड़ी पर घूम-घूमकर कोमल पत्तियाँ चर रही थी, तब उसने देखा कि एक पेड़ की सड़ी हुई खोह में एक दानों का गुच्छा लटका है। वह काले–स्लेटी रंग का था।

क्या हो सकता था वह? उसे थोड़ा डर भी लग रहा था, पर क्योंकि वह शरारती थी, इसलिए उसने अपना सिर झुकाया और गुच्छे को एक ज़ोर का झटका दिया।

तब उसने देख कि दाने फट गए हैं और उनमें से बूँदें टपक रही हैं। साथ ही गुच्छे में से पतली कमरवाली पीले रंग की मक्खियाँ निकल आई हैं और अफ़रा-तफ़री में गुच्छे के ऊपर चल रही हैं।

नन्ही हिरनी पास गई तो उसने पाया कि मक्खियों ने उसे काटा नहीं। फिर बहुत धीरे से उसने अपनी जीभ की नोक से एक बूँद चाटी और बड़े चाव से उसे चखा। वे बूँदें शहद की थीं और वह भी बढ़ियावाला शहद। वह काले दानों का गुच्छा उन मधुमक्खियों का छत्ता था, जो कि काटती नहीं हैं, उनके पास डंक जो नहीं होता। हाँ, और ऐसी मधुमक्खियाँ वाक़ई में होती हैं।

दो ही मिनट में गामीता सारा का सारा शहद चाट गई। ख़ुशी से पागल वह अपनी माँ को यह बात बताने दौड़ गई। लेकिन माँ ने उसे ख़ूब ज़ोर से डाँट लगाई और कहा, "मेरी बच्ची, मधुमक्खी के छत्ते से बहुत सावधान रहना शहद खाने में मज़ा तो बहुत आता है, लेकिन उसे निकालना बड़े ही ख़तरे का काम है। छत्ते में नाक घुसेड़ने की कोशिश कभी मत करना।"

गामीता जो बहुत ख़ुश थी, कह उठी, "वे काटती नहीं हैं माँ। ताबानो और ऊरा[1] तो काटते हैं, लेकिन मधुमक्खियाँ नहीं।"

"तुम ग़लती कर रही हो मेरी बच्ची।" माँ ने कहा, "आज तुम्हारी क़िस्मत अच्छी थी कि कुछ हुआ नहीं। मधुमक्खियाँ और ततैये बुरे भी होते हैं। बहुत ध्यान रखना बेटी, नहीं तो मैं बहुत नाराज़ हो जाऊँगी।"

"हाँ माँ! हाँ!" गमीता ने माँ से कहा। लेकिन अगली ही सुबह जो पहला काम उसने किया, वह था, इंसानों की बनाई पहाड़ी पगडंडी पर चल पड़ना, ताकि छत्ते आसानी से नज़र आ सकें।

अंत में उसे एक छत्ता मिल ही गया। अबकी जो मधुमक्खियाँ थीं, वे काले रंग की थीं। उनकी कमर पर एक पट्टी थी और वे छत्ते पर चल रही थीं। छत्ता भी कुछ अलग-सा था। लेकिन गामीता ने यही सोचा कि क्योंकि वे मधुमक्खियाँ और भी बड़ी हैं तो उनका शहद और भी मीठा होना चाहिए।

उसे अपनी माँ की बातें याद आईं तो सही, लेकिन फिर उसने सोचा कि माँ कुछ ज़्यादा ही बढ़ा चढ़ाकर बोल रही थी, जैसा सभी गामीताओं की माँएँ अक्सर करती हैं। तब उसने छत्ते को अपने सिर से एक ज़ोरदार झटका दिया ।

काश कि उसने ऐसा ना किया होता! एकदम से सैकड़ों मधुमक्खियाँ छत्ते में से निकल पड़ीं और उसके सारे शरीर पर जा चिपटीं। उन्होंने उसके सारे बदन को डंक मार-मारकर छलनी कर दिया। सिर पर, पेट पर, पूँछ पर; और सबसे दर्दनाक बात यह थी कि दस से ज़्यादा मधुमक्खियों ने उसकी आँखों पर भी काट डाला।

बेचारी गामीता दर्द से पागल बिलबिलाती हुई दौड़ने लगी। अचानक वह रुक गई, क्योंकि अब उसे दिखना ही बंद हो गया था। वह अंधी हो गई थी। पूरी तरह से अंधी।

उसकी आँखें मोटी-मोटी सूज गईं थीं। वह चुपचाप खड़ी दर्द और डर से काँपने लगी। वह केवल दुःख से रो ही सकती थी।

माँ! माँ!

उसकी माँ बहुत देर हो जाने के कारण उसे ढूँढ़ने निकल पड़ी थी। अंत में उसे वह मिल ही गई। वह भी अपनी गामीता को अंधी पाकर बहुत परेशान हो गई। वह उसे धीरे-धीरे अपनी गुफा तक ले गई। गामीता अपना सिर अपनी माँ की छाती पर टिकाए चल रही थी और रास्ते भर मिलनेवाले जंगली जानवर पास आ-आकर बेचारी उदास गामीता की सूजी आँखों को देखते थे।

---

1. ताबानो—घोड़ों को परेशान करनेवाले छोटे कीड़े
   ऊरा—घोड़ों को परेशान करनेवाले कीड़ों के अंडे



माँ की समझ में ही नहीं आता था कि वह करे तो क्या। वह क्या इलाज कर सकती थी? वह जानती थी कि पहाड़ी के उस पार एक ऐसा आदमी रहता है, जिसके पास इलाज है। वह आदमी शिकारी था और हिरनों का शिकार भी करता था। लेकिन फिर भी वह एक अच्छा इंसान था।

माँ को इस बात का डर था कि वह अपनी बेटी को लेकर उस हिरनों के शिकारी के पास कैसे ले जाए। वह व्याकुल थी, इसलिए उसने ऐसा करने का फ़ैसला कर ही लिया; पर इससे पहले उसने तय किया कि वह ओरमीगेरो[1] भालू से एक चिट्ठी ले जाएगी। वह भालू उस आदमी का दोस्त था।

उसने गामीता को झाड़ी में अच्छी तरह छिपा दिया और दौड़ती हुई पहाड़ी को पार कर गई। वहाँ वह शेर के मुँह में आते-आते रह गई। जब तक वह अपने दोस्त के डेरे पर पहुँची, वह इतनी थक चुकी थी कि अब उससे एक क़दम भी आगे नहीं बढ़ाया जा सकता था।

यह दोस्त, जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, एक ओरमीगेरो भालू था। पर वह एक ऐसी प्रजाति का था, जिसके भालू पीले रंग के होते हैं। उनके पीले रंग पर एक काले रंग की-सी वास्केट होती है, जो आगे और पीछे से कंधों के उपर से होकर जाती दो पट्टियों से जुड़ी होती हैं। उसकी पूँछ भी चपटी एवं लचीली होती है, क्योंकि वह हमेशा ही पेड़ों पर रहता है और पूँछ के सहारे लटका करता है।

भालू और आदमी की यह क़रीबी दोस्ती क्यों थी। इस सवाल का जवाब तो पहाड़ी पर किसी के पास भी नहीं था। लेकिन कभी न कभी तो यह राज़ हमारे कानों तक पहुँच ही जाएगा।

बेचारी माँ किसी तरह भालू के डेरे पर पहुँच ही गई।

ठक! ठक! ठक! हाँफते हुए उसने खटखटाया।

"कौन है।" भालू ने पूछा।

"मैं हूँ गामा!"

"अच्छा! गामा क्या चाहती हो?"

"मैं आपसे शिकारी के नाम एक चिट्ठी माँगने आई हूँ। मेरी बेटी गामीता अंधी हो गई है।"

"ओह! गामीता!" भालू बोला, "वह तो बहुत प्यारी है। उसके लिए जो भी चाहती हो मैं ज़रूर करूँगा। कुछ भी लिखने की ज़रूरत नहीं है..., उसे यह दिखा देना और वह तुम्हारी ज़रूर सुनेगा।"

और अपनी पूँछ के छोर से भालू ने गामा की ओर एक साँप का सूखा हुआ सिर बढ़ा दिया, जिसमें कि अब तक ज़हरवाले दाँत जुड़े हुए थे।

"उसे यह दिखा देना।" उस चींटी खानेवाले ने कहा। इससे ज़्यादा उसने और कुछ भी नहीं कहा।

"धन्यवाद भालू भैया!" गामा ने ख़ुश हो कर कहा, "आप बहुत अच्छे हैं।"

वह दौड़ती हुई वहाँ से निकल पड़ी। देर बहुत हो चुकी थी और सवेरा होनेवाला था।

---

[1] ओरमीगेरो भालू–ऐसा जानवर जिसकी नाक लंबी और पतली होती है और वह केवल चींटी और दीमक खाता है।

अपनी गुफा से गुज़रते समय उसने अपनी बेटी को साथ ले लिया। वह बेचारी लगातार रो रही थी। चलते-चलते वे आख़िर गाँव तक पहुँच गए। वहाँ उन्हें धीरे-धीरे चलना पड़ा ताकी कुत्तों को उनकी भनक न पड़ जाए। वे शिकारी के दरवाज़े पर जा पहुँचे।

ठक! ठक! ठक!– उन्होंने खटखटाया।

"क्या है।" भीतर से एक आदमी ने पूछा।

"हम गामा हैं। हमारे पास साँप का सिर है।" माँ ने जल्दी से यह बात कह दी, ताकि उस आदमी को पता चल जाए कि वे भालू की दोस्त है।

"ओह हो!" कहते हुए आदमी ने पूछा, "क्या बात है?"

"हम इसलिए आए हैं, ताकि तुम मेरी बेटी का इलाज कर दो और उसे ठीक कर दो। बेचारी गामीता अंधी हो गई है।"

फिर उसने शिकारी को मधुमक्खियों वाली सारी बात कह सुनाई।

"हम्मम! आओ चलो देखें इस बच्ची को क्या हुआ है?" शिकारी ने कहा। अंदर जाकर वह एक उँची-सी कुर्सी ले आया। उसने गामीता को उस पर बैठा दिया, ताकि उसे उसकी आँखें जाँचने के लिए अधिक झुकना न पड़े। उसने एक बड़े गोल लेन्स से उसकी आँखों को अच्छी तरह से जाँचा। इस दौरान गामा माँ अपने गले में एक लालटेन लटकाए रौशनी डाल रही थी।

"इसमें परेशानी की कोई बात नहीं है।" अंत में शिकारी ने गामीता को नीचे उतारते हुए कहा, "इसे आपको बीस दिन तक अँधेरे में रखना होगा। उसके बाद इसे यह पीले लेन्स पहना देना। और देखना यह एकदम ठीक हो लाएगी।"

"आपका बहुत बहुत शुक्रिया शिकारी भैया!" माँ ने ख़ुश होकर कहा और पूछा, "आपकी फ़ीस कितनी हुई?"

"अरे कोई बात नहीं।" शिकारी ने हँसकर टालते हुए कहा, "लेकिन हाँ! कुत्तों से सावधान रहना, क्योंकि ठीक बग़ल के मुहल्ले में एक आदमी रहता है, जिसने हिरनों का पीछा करनेवाले कुत्ते पाल रखे हैं।"

गामा बेचारी डर के मारे सुन्न पड़ गईं, हरेक कदम भी फूँक-फूँककर उठाती थीं और रह-रहकर रुक जाती थीं। उस पर मुसीबत यह कि कुत्तों ने उन्हें सूँघकर ढूँढ़ ही निकाला और पीछा करते हुए आधा रास्ता पहाड़ी तक खदेड़ दिया। वे एक चौड़ी-सी पगडंडी से होकर दौड़ रही थीं। वे और नन्हीं गामीता डोलती-लुढ़कती आगे-आगे जा रही थीं।

जैसा कि शिकारी ने कहा था, ठीक वैसे ही इलाज शुरू किया गया। लेकिन यह केवल गामा ही जानती थी कि उसे कितनी मुश्किल आई। गामीता को एक चौड़े-खोखले तनेवाले पेड़ के तने में रखना पड़ा। वे बीस दिन तो जैसे काटे नहीं कटते थे। अंदर कुछ भी दिखाई नहीं देता था। अंत में एक सुबह माँ ने द्वार पर से लकड़ियों के उस ढेर को अपने सिर से ढकेलकर किनारे किया, ताकि रौशनी अंदर आ सके। गामीता अपने पीले लेन्स पहने दौड़ती-चहकती बाहर भाग आई।

"माँ मैं देख सकती हूँ! माँ मैं देख सकती हूँ!"

गामा भी एक पेड़ की डाली से टिककर ख़ुशी के आँसू बहाने लगी। उसकी नन्ही गामीता ठीक जो हो गई थी।

गामीता पूरी तरह से ठीक हो गई। पर स्वस्थ हो जाने के बाद भी उसे एक दुःख था। वह यह था कि वह हर हाल में उस आदमी का उधार चुकाना चाहती थी, जिसने उसके साथ इतना अच्छा व्यवहार किया था। बस वह यही नहीं जानती थी कि ऐसा करेगी तो कैसे!

फिर एक दिन उसे लगा कि तरीक़ा उसे मिल गया है। वह नदी, पोखर, नालों के किनारे-किनारे गार्सा[1] के पंख ढूँढ़ने लगी, ताकि वह उन्हें शिकारी को भेंट कर सके। उधर उस शिकारी को भी कभी-कभी उस अंधी गामीता का ख़याल आता था, जिसका उसने इलाज किया था।

एक बारिश की रात वह आदमी अपने कमरे में बैठा पढ़ रहा था। वह बहुत ख़ुश था, क्योंकि उसने अभी-अभी अपने छप्पर की मरम्मत की थी और अब बारिश का पानी चू नहीं रहा था। वह पढ़ने में मग्न था कि इतने में उसने दरवाज़े पर दस्तक सुनी। उसने दरवाज़ा खोला तो पाया कि नन्ही गामीता एक गार्सा के पंखों का भीगा हुआ गुच्छा लिये खड़ी है।

शिकारी ज़ोर से हँस दिया। गामीता को शर्म आ गई, पर वह यह सोचकर उदास हो गई कि वह उसके छोटे से तोहफ़े पर हँस रहा है। तब उसने गार्सा के और भी बड़े-बड़े सूखे एवं साफ़ पंख ढूँढ़े और एक सप्ताह बाद वह फिर वहीं जा पहुँची। आदमी पिछली बार प्यार से हँस दिया था, पर अबकी बार वह हँसा नहीं, क्योंकि गामीता उसकी हँसी समझी ही नहीं थी। इस बार उसने गामीता को ताकुआरा[2] की नली में शहद भर कर दिया और गामीता ने वह ख़ुशी-ख़ुशी ले लिया।

तब से गामीता और शिकारी बहुत अच्छे दोस्त बन गए। वह हमेशा गार्सा के पंख—जो बहुत महँगे होते हैं—ढूँढ़-ढूँढ़कर उसके लिए लाया करती। आदमी भी उस के लिए लोटे में शहद भरकर रखा करता। वे दोनों घंटों बातें किया करते। वह मेज़ पर शहद का लोटा रखकर उसके लिए ऊँची कुर्सी लगा देता था और कभी-कभी उसे अपनी सिगरेटें भी दे दिया करता था, क्योंकि गामा हिरन बड़े ही चाव से उन्हें खाते हैं और उससे उन्हें कुछ होता भी नहीं है। इसी तरह वे लकड़ी की अँगीठी की लपटें देखते हुए समय काटते।

कुत्तों के डर के मारे गामीता केवल तूफ़ानी रातों में ही जाया करती थी। जब शाम गहरी हो जाती थी और पानी पड़ने लगता था, तब शिकारी मेज़ पर शहद का लोटा और एक रूमाल रख देता था। वह ख़ुद कॉफ़ी पीता हुआ दरवाज़े पर ठक-ठक की आवाज़ का इंतज़ार करता रहता था। वह जानता था कि वह ठक-ठक उसकी दोस्त गामीता की ही हो सकती थी।

---

1. गार्सा—सुंदर पंखोंवाली वक प्रजाति की चिड़िया।
2. ताकुआरा—बाँस की एक प्रजाति।

कहानी दो कोआती के बच्चों और दो आदमी के बच्चों की

एक बार की बात है। एक कोआती[1] था, जिसके तीन बच्चे थे। वे पहाड़ी पर रहते थे और फल, जड़ें, और चिड़ियों के अंडे खाया करते थे। वे पेड़ों पर चढ़े रहते थे और जब भी कोई तेज़ आवाज़ सुनते तो झटपट सिर के बल ज़मीन पर छलाँग लगाकर, पूँछ हवा में उठाकर सरपट भाग जाते थे।

एक दिन जब कोआती के बच्चे कुछ बड़े हो गए तो उनकी माँ ने उन्हें एक संतरे के पेड़ पर बुलाया और कहा, "नन्हे कोआती, आप अभी छोटे हैं और अकेले खाना नहीं खोज सकते हैं। आपको अब यह सीखना होगा, क्योंकि जब आप बड़े हो जाएँगे, तब आपको अन्य कोआती की ही तरह अकेले रहना पड़ेगा। बड़े कोआती को कासकारूदोस[2] पकड़ना पसंद है। उसे यह सड़ती लकड़ियों के बीच मिलेंगे, क्योंकि वहाँ ख़ूब सारे काकरोच और कासकारूदोस रहते हैं। दूसरा कोआती फलों का शौकीन है। उसे वे यहाँ इसी जंगल में मिलेंगे, जहाँ कि अब दिसंबर तक संतरे लगते रहेंगे। तीसरे को अंडे पसंद हैं। वह चारों तरफ़ कहीं भी जा सकता है, क्योंकि चिड़ियों के घोंसले तो सभी जगह हैं। लेकिन आप कभी भी खेतों की तरफ़ घोंसला ढूँढ़ने मत जाना। वहाँ बहुत ख़तरा है।

"बच्चो, केवल एक चीज़ है, जिससे कि आपको बहुत सावधान रहना होगा। वह हैं कुत्ते। मेरी एक बार उनसे भिड़ंत हो गई थी। मैं जानती हूँ, मैं आपसे क्या कह रही हूँ। देखो मेरा एक दाँत भी टूटा हुआ है। कुत्तों के पीछे हमेशा आदमी आते हैं। वे ऐसा शोर मचाते हुए आते हैं कि जान ही निकल जाए। जब भी आप कोई ऐसी तेज़ आवाज़ सुनें तो एकदम सिर के बल छलाँग लगा दें, चाहे आप कितने ही उँचे पेड़ पर क्यों न हों। नहीं तो यह तो तय है कि वे आपको एक ही गोली से मार गिराएँगे।"

---

1. कोआती--मांसाहारी दक्षिण अमरीकी जानवर, जिसकी नाक बड़ी और नोकीली होती है, कान छोटे और गोल एवं बाल लंबे और बिखरे होते हैं। सिर बड़ा एवं नाख़ून तीखे होते हैं, जो कि पेड़ पर चढ़ने के काम आते हैं।
2. कासकारूदोस–मोटे कवचवाला कीड़ा। अंग्रेज़ी में बीटल।

माँ की बातें ख़त्म होने पर वे सभी पेड़ पर से उतर गए और अलग-अलग बाएँ से दाएँ, दाएँ से बाएँ चलने लगे, जैसे कि उनका कुछ खो गया हो। बात केवल इतनी-सी है कि कोआती तो चलते ही ऐसे हैं।

कासकारूदोस पसंद करनेवाला कोआती बच्चा सड़ी हुई लकड़ियों और घास-फूस के बीच उन्हें खोजने लगा। उसे वहाँ इतने सारे मिल गए कि वह उन्हें खाते-खाते सो गया। दूसरा, जिसे फल ज्यादा अच्छे लगते थे, उसने जी भर कर संतरे खाए। संतरे का जंगल पहाड़ी पर ही था। ऐसा पारागुआई और मिसियोनेस में अक्सर होता है। और वहाँ उन्हें परेशान करने कोई आदमी भी कभी नहीं पहुँचा था। तीसरा कोआती जो कि अंडों का शौकीन था, सारे दिन चलते रहने के बाद भी दो ही घोंसले खोज पाया। एक तुकान[1] का, जिसमें तीन ही अंडे थे और दूसरा तोरतोजा[2] का, जिसमें केवल दो ही अंडे थे। कुल पाँच छोटे-छोटे अंडे, जिनसे पेट नहीं भर सकता था। शाम होने पर भी नन्हा कोआती उतना ही भूखा था, जितना वह सवेरे था। वहाँ से उसे गाँव के खेत दिख रहे थे। वह माँ की बताई बातों को सोचने लगा।

'क्यों मना किया होगा माँ ने गाँव में घोंसले खोजने से?'

वह अभी सोच ही रहा था कि दूर उसे एक चिड़िया के गाने की आवाज़ सुनाई दी।

'क्या दमदार आवाज़ है!' उसने सोचा, 'इस चिड़िया के अंडे भी बड़े-बड़े होने चाहिए।'

गाना फिर गूँजा तो कोआती ने पहाड़ी के बीच से दौड़ लगा दी। वह शॉर्ट कट लेता हुआ पगडंडी से बाईं ओर दौड़ पड़ा, उसी तरफ़ जहाँ से गाने की आवाज़ आई थी।

सूरज डूब रहा था, लेकिन कोआती अपनी दुम उठाए हवा से बातें करता दौड़ा जा रहा था। अंत में वह पहाड़ी के छोर पर आ रुका। वहाँ से आगे गाँव के खेत शुरू होते थे। दूर उसे आदमियों के घर दिखाई दिए। एक आदमी ऊँचे बूट पहने हुए घोड़े को लगाम पकड़कर ले जाता भी दिखाई दिया। उसने एक पंछी भी देखा, जो गा रहा था। उसने अपना सिर पीट लिया और बोला, " मैं भी कितना बेवक़ूफ़ हूँ। अब समझा, यह पंछी कौन-सा है। यह तो एक मुर्ग़ा है, एक दिन माँ ने मुझे दिखाया था जो पेड़ पर चढ़ा हुआ था। मुर्ग़ों का गाना बड़ा मज़ेदार होता है और उनकी बहुत सी मुर्ग़ियाँ भी होती हैं, जो बहुत से अंडे भी देती हैं।" एक पल के लिए उसे माँ की कही बात याद आई। लेकिन मन पर उसका ज़ोर नहीं चला। वह वहीं पहाड़ी के छोर पर बैठा रात घनी होने का इंतज़ार करने लगा ताकि वह मुर्ग़ीख़ाने तक जा सके।

आख़िकार रात हो ही गई। दबे पाँव चुपके-चुपके वह उस घर तक जा पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसने ध्यान से सुना। ज़रा-सी भी आवाज़ नहीं आ रही थी। छोटा कोआती ख़ुशी से पागल हो रहा था यह सोचकर कि आज तो वह सौ, हज़ार, दो हज़ार मुर्ग़ी के अंडे खानेवाला है। और वह मुर्ग़ीख़ाने की तरफ़ बढ़ा।

---

1. तुकान–दक्षिण अमरीकी पंछी की एक प्रजाति। बहुत छोटा; लंबी चोंच; चटक रंग।
2. तोरतोजा–दक्षिण अमरीकी पंछी की एक प्रजाति। बहुत ही छोटा; मोटी चोंच।

दरवाज़े पर पहुँचते ही जिस पर पहले उसकी नज़र पड़ी, वह था ज़मीन पर पड़ा एक अंडा। उसने एक पल के लिए सोचा कि उसे वहीं छोड़ दिया जाए और अंत में खाया जाए। वह एक काफ़ी बड़ा अंडा था। उसके मुँह में पानी आ गया और उसने जाकर अंडे में दाँत गड़ा दिए।

उसने काटा ही था कि तड़ाक! एक ज़बरदस्त वार हुआ उसके मुँह पर और उसके जबड़े में ज़ोर से दर्द उठ खड़ा हुआ।

"माँ! माँ!" चिल्लाता हुआ दर्द से बौखलाया वह उछलने लगा। लेकिन उसे तो किसी ने दबोच रखा था और तभी उसे कुत्तों के भौंकने की आवाज़ भी सुनाई दी।

जब कोआती पहाड़ी किनारे रात होने का इंतज़ार कर रहा था, ताकि वह मुर्ग़ीख़ाने पर धावा बोल सके, तब उस घर का मालिक भूसे के ढेर पर अपने बच्चों के साथ खेल रहा था। उसके दो प्यारे-प्यारे गोरे-गोरे बच्चे थे। एक पाँच साल का था और एक छह साल का। वे खूब खिलखिलाते हुए दौड़ते थे, गिरते-पड़ते, फिर उठकर दौड़ते थे और हँसते-हँसते गिरते दौड़ते खेल रहे थे। अंत में उन्होंने खेल ख़त्म किया, क्योंकि रात हो रही थी। आदमी ने कहा, "मैं लोमड़ी के लिए जाल लगाकर आता हूँ। वह हमारी मुर्ग़ियों को मारती है और अंडे चुरा ले जाती है।"

वह गया और उसने जाल तैयार कर दिया। फिर उन्होंने खाना खाया और वे सोने चले गए। लेकिन बच्चों को तो नींद नहीं आ रही थी। वे एक बिस्तर से दूसरे बिस्तर पर उछलकर चादरों में लिपट-लिपटकर खेलने लगे। पिताजी, जो खाने के कमरे में बैठे पढ़ रहे थे, उन्हें अपनी मनमानी करने दे रहे थे। अचानक बच्चों ने अपना खेल रोक दिया और चीख़ पड़े, "पापा! लोमड़ी जाल में फँस गई! कुत्ते भौंक रहे हैं! हम भी चलेंगे पापा।"

पिता ने बात मान ली, लेकिन शर्त रखी कि पहले दोनों बच्चे चप्पल पहन लें। साँपों के डर से कभी भी उन्हें नंगे पाँव रात के समय नहीं चलने दिया जाता था। वे मुर्ग़ीख़ाने पहुँचे और क्या देखा उन्होंने? उन्होंने देखा कि पिताजी झुककर बैठे हैं और एक हाथ से कुत्ते को रोके हुए हैं और दूसरे हाथ में एक कोआती को दुम से पकड़े हुए हैं। वह एक नन्हा-सा कोआती था और ख़ूब चिल्ला रहा था। उसकी चीख़ तीखी और तेज़ थी।

"पापा उसे मत मारिए!" बच्चों ने कहा, "वह बहुत छोटा है! उसे हमें दे दीजिए।"

"ठीक है, मैं इसे आपको दे देता हूँ।" पिताजी बोले, "लेकिन इसका ध्यान रखना और भूलना मत कि कोआती भी आप ही की तरह पानी पीते हैं।"

उन्होंने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि उन बच्चों के पास पहले एक पहाड़ी बिल्ली का बच्चा था। वे उसे हर थोड़ी-थोड़ी देर में मीट चुरा-चुराकर देते थे, लेकिन पानी नहीं देते थे। इससे वह बेचारा मर गया।

उन्होंने कोआती को भी बिल्ली के पिंजरे में रख दिया। वह मुर्ग़ीख़ाने के पास ही था। फिर वे जाकर सो गए।

आधी रात से ज़्यादा बीत चुकी थी और एक गहरा सन्नाटा छाया हुआ था। जाल की मार से अब तक तड़प रहे नन्हे कोआती ने चाँद की रौशनी में तीन परछाइयों को दबे पाँव पास आते देखा। ख़ुशी के मारे उसकी साँस ही अटक गई। उसने अपनी माँ और दोनो भाइयों को आते पहचाना। वे उसे ढूँढ़ने ही आ रहे थे।

"माँ! माँ!" बेचारा क़ैदी हल्की-सी आवाज़ में फुसफुसाया, ताकि ज़्यादा शोर न हो, "मैं यहाँ हूँ! मुझे यहाँ से निकालो। मैं यहाँ नहीं रहना चाहता! माँ...माँ!"

और वह फूट-फूटकर रोने लगा।

लेकिन सभी को इस बात की ख़ुशी थी कि कम से कम वह मिल तो गया था। उन सभी ने उसे ख़ूब लाड़ किया।

फिर झटपट कोशिश शुरू हो गई कि बंदी को छुड़ाया कैसे जाए। पहले तो पिंजरे की जाली के तार को दाँतों से काटने की कोशिश की गई, लेकिन कुछ हासिल न हुआ। तभी माँ को एक बात सूझी।

"चलो आदमी के औज़ार ढूँढ़कर लाते हैं। आदमियों के पास लोहा काटनेवाले औज़ार होते हैं। उन्हें रेती कहते हैं। उसके तीन पल्ले होते हैं रैटल साँपों की दुम की तरह। उसे आगे-पीछे धकेलते खींचते हैं। चलो उसे ढूँढ़ने चलें।"

वे आदमी के औज़ारघर में गए और रेती लेकर लौट आए। उन्हें लगा कि एक अकेला यह काम न कर सकेगा, इसलिए वे तीनों ही रेती पकड़कर शुरू हो गए।

वे इतनी ज़ोर से रेती चलाने लगे कि पिंजरा हिलने लगा और ज़ोर की आवाज़ होने लगी। उस आवाज़ को सुनकर कुत्ते जाग गए और भौंकने लगे। अब कोआती यह तो चाहते नहीं थे कि ये कुत्ते आकर उनसे इस कांड का हिसाब लें। तो वे सर पर पैर रखकर झटपट पहाड़ी की ओर भाग निकले और रेती वहीं फेंक गए।

अगले दिन बच्चे सवेरे ही उठ गए और अपने नए मेहमान को देखने चल पड़े, लेकिन वह बेचारा तो बड़ा दुःखी था।

"इसे किस नाम से बुलाएँ?" बहन ने भाई से पूछा।

"मुझे मालूम है।" लड़का बोला, "इसे हम सतरह बुलाएँगे।"

"सतरह क्यों? कभी किसी पहाड़ी जानवर का नाम इतना अजीब हुआ है क्या?" वह लड़का अभी गिनती गिनना सीख ही रहा था। इसलिए हो सकता है कि उसे यह अंक अच्छा लगा होगा।

ख़ैर, बात तय यों हुई कि उसका नाम रख दिया गया सत–रा । उन्होंने उसे रोटी, अँगूर, चॉकलेट, मांस, झींगे और बढ़ियावाले अंडे खाने को दिए। यहाँ तक हो गया कि उसने उन्हें एक ही दिन भर में अपना सिर भी सहलाने दे दिया। बच्चों का प्यार इतना सच्चा एवं मोहक होता है कि रात आते आते बेचारा कोआती अपनी क़ैद को भी स्वीकार करने को लगभग तैयार हो गया था।

हर पल वह सोचता कि यहाँ खाने के लिए कितनी अच्छी-अच्छी चीज़ें मिलती हैं; और सोचता कि वे प्यारे-प्यारे आदमी के बच्चे कितने खुश और कितने अच्छे हैं।

दो रात तक घर का कुत्ता पिंजरे के इतना पास सोया रहा कि बंदी का परिवार चाहते हुए भी उसके पास आने की हिम्मत न कर सका; और जब तीसरी रात वे फिर उसके पास रंदा लिए उसे छुड़ाने के इरादे से पहुँचे तो वह उनसे बोला, "माँ, मैं अब यहाँ से नहीं जाना चाहता हूँ। मुझे यहाँ अच्छे-अच्छे अंडे मिलते हैं और ये लोग मेरे दोस्त भी बन गए हैं। आज उन्होंने मुझसे कहा कि यदि मैंने उनका कहा माना तो वे मुझे जल्द ही आज़ाद घूमने देंगे। वे हमारी ही तरह हैं। वे भी बच्चे हैं और हम सब साथ खेलते हैं।"

जंगली कोआती यह सुनकर बड़े दुःखी हो गए, लेकिन उन्होंने उसकी बात मान ली और वादा किया कि वे हर रात उससे मिलने आया करेंगे।

और ऐसा ही हुआ भी। हर रात, बारिश हो या न हो, माँ और दोनों भाई उसके साथ कुछ समय ज़रूर बिताते थे। नन्हा कोआती उन्हें पिंजरे की सलाखों के बीच से सरकाकर रोटी देता और दोनों जंगली कोआती पिंजरे के सामने बैठे खाते रहते।

पंद्रह दिन पूरे होते-होते नन्हा कोआती आज़ाद घूमने लगा था और रात होने पर वह खुद ही अपने पिंजरे में चला जाता था। हाँ, एक आध बार उसके कान ज़रूर खींचे गए, क्योंकि वह मुर्ग़ीख़ाने के ज़्यादा पास चला जाता था। इसे छोड़ बाक़ी सब ठीक था। उसमें और दोनों बच्चों में बड़ा प्यार था। उसके जंगली भाई भी, यह देखकर कि वे आदमी के बच्चे कितने अच्छे हैं, उन्हें चाहने लगे थे।

फिर एक काली अँधेरी रात, जब बहुत गर्मी थी, जंगली कोआतियों ने अपने छोटे भाई को पुकारा तो कोई जवाब नहीं आया। वे परेशान होकर पास गए तो उनका पैर एक साँप पर पड़ते-पड़ते रह गया। वह साँप पिंजरे के दरवाज़े पर कुंडली मारकर बैठा था। दोनों कोआती की समझ में आ गया कि नन्हा कोआती जब भीतर जा रहा होगा, तब उसे साँप ने डस लिया होगा। इसलिए उसने उनके बुलाने पर उत्तर नहीं दिया था। यह भी हो सकता है कि अब तक तो वह मर भी गया होगा। लेकिन वे उसकी मौत का बदला ज़रूर लेंगे। पल भर में ही उन तीनों ने रैटल साँप को पागल कर दिया। यहाँ से वहाँ छलाँग लगाते हुए वे उस पर टूट पड़े और काट-काटकर उसका सिर धड़ से अलग कर दिया।

वे दौड़कर अंदर गए तो पाया कि नन्हा कोआती सूजा हुआ पड़ा था। उसके हाथ-पैर काँप रहे थे। बेकार ही उन्होंने उसे हिलाया। सवा घंटे तक वे उसके शरीर को चाटते रहे, पर सब व्यर्थ ही था। नन्हे कोआती ने एक बार अपना मुँह खोला और फिर उसकी साँसें रुक गईं। वह मर चुका था। कहते हैं कि कोआती पर साँप का ज़हर बेअसर होता है। उन्हें साँप के काटने से कुछ नहीं होता, जबकि मानगुस्ता[1] जैसे जानवरों पर ख़ूब असर होता है। यह बात साफ़ थी कि नन्हे कोआती को

1. मानगूस्ता–बिल्ली के जैसा स्लेटी रंग का जानवर।



साँप ने किसी आर्टरी या नस पर जा डसा था, क्योंकि तभी ख़ून में ज़हर तेज़ी से फैल जाता है और जानवर मर जाता है।

उसकी यह दशा देख माँ और भाई काफ़ी देर तक रोते रहे। क्योंकि अब कुछ किया नहीं जा सकता था, इसलिए वे पिंजरे से बाहर निकल आए। मुड़कर उन्होंने आख़िरी बार उसे वहाँ देखा, जहाँ वह इतना ख़ुश रहा करता था और फिर पहाड़ी की ओर चल दिए।

लेकिन उन तीन कोआती को यही चिन्ता लगी रही कि वे बच्चे जब अगले दिन अपने प्यारे नन्हे कोआती को मरा पाएँगे तो वे क्या सोचेंगे? वे उसे बहुत अच्छा मानते थे, और कोआती भी उन आदमी के बच्चों से बहुत प्यार करते थे। इसलिए वे तीनों ही इस सोच में डूब गए कि किस तरह उन बच्चों को इस दुःख से बचाया जाए।

उन्होंने बड़ी देर तक इस समस्या पर आपस में बातचीत की। अंत में वे इस नतीजे पर पहुँचे कि जो दूसरे नंबर का कोआती था, वह शक्ल-सूरत एवं हाव-भाव में अपने मृत भाई से काफ़ी मिलता जुलता था, इसलिए वह पिंजरे में अपने मृत भाई की जगह लेगा। उन्हें घर के अंदर की सारी बातें तो पता ही थीं, क्योंकि नन्हें कोआती ने उन्हें सारी कहानियाँ जो सुना रखी थीं। बच्चों को कुछ भी पता नहीं चलेगा। कभी-कभी उन्हें कुछ बातें अजीब तो लगेंगी, लेकिन बाक़ी सब ठीक ही होगा।

और ऐसा ही हुआ भी। वे फिर से घर पर पहुँचे और एक नए नन्हे कोआती ने पुराने कोआती की जगह ले ली। माँ और बड़ा भाई मृत भाई की लाश को दाँतों से खींचकर धीरे-धीरे पहाड़ी पर ले गए। उसका सिर एक तरफ़ लटक रहा था और दुम ज़मीन पर निर्जीव घिसट रही थी।

अगले दिन बच्चों को बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि नन्हे कोआती की कई आदतें अलग और अजीब थीं। लेकिन यह भी पुराने कोआती की ही तरह अच्छा और प्यारा था, इसलिए बच्चों को ज़रा-सा भी शक नहीं हुआ। उन्होंने फिर से अपना वही पुराना बच्चों का परिवार बना लिया और पहले की ही तरह जंगली कोआती रात पड़ने पर अपने शहरी कोआती से मिलने आते रहे। वह उनके लिए उबले अंडों के टुकड़े बचाकर रखता, जो वे उसकी बग़ल में बैठकर खाया करते थे और उसे अपने जंगली जीवन के क़िस्से सुनाया करते थे।

याबेबिरी का रास्ता

मिसियोनेस शहर में जो याबेबिरी नदी है, उसमें बहुत-सी राया[1] रहती हैं। असल में याबेबिरी का मतलब भी तो राया की नदी ही होता है। वे इतनी सारी हैं कि कभी-कभी तो पानी में पैर डालने से भी डर लगता है। मैं एक आदमी को जानता था, जिसकी एड़ी में एक राया ने काट लिया था। उसे मीलों पैर घसीट-घसीटकर घर तक जाना पड़ा था। वह दर्द से तड़पता-कराहता गिरता-पड़ता गया था। राया के काटे का दर्द सबसे भयानक दर्दों में से माना जाता है।

याबेबिरी में राया के अलावा और भी कई तरह की मछलियाँ रहती हैं, जिनका आदमी डायनामाइट बमों से शिकार करते हैं। वे बम को नदी में उछाल देते हैं, जिससे सैकड़ों मछलियाँ मारी जाती हैं। जो भी मछलियाँ पास होती हैं, मारी जाती हैं, चाहे वे एक घर के जितनी बड़ी ही क्यों न हों। वे नन्ही मछलियाँ भी मारी जाती हैं, जो बेचारी किसी काम की नहीं होती।

ख़ैर, एक बार एक आदमी वहाँ रहने गया। उसे डायनामाइट बम फोड़नेवाली बात अच्छी नहीं लगी। उसे मछलियों पर दया आती थी। उसे इस बात से परेशानी नहीं थी कि खाने के मतलब से उनका शिकार किया जाए। लेकिन बेवजह सैकड़ों को मार डालना उसे मंज़ूर न था। जो आदमी बम फोड़ा करते थे, वे पहले-पहल उससे बड़ा नाराज़ हुए।

वह आदमी अच्छा था, लेकिन स्वभाव से बड़ा गंभीर था, इसलिए वे सब वहाँ से कहीं और चले गए और सभी मछलियाँ ख़ुशी-ख़ुशी वहाँ रहने लगीं। वे उसकी बड़ी आभारी थीं और जब वह नदी किनारे धुआँ उड़ाता हुआ चलता था तो राया उसके साथ साथ कीचड़ में फिसलती हुई उसका साथ देकर ख़ुश होती थीं। वह यह सब नहीं जानता था और बड़े आराम से वहाँ रहने लगा था।

अब हुआ यूँ , कि एक दिन शाम पड़े, एक लोमड़ी दौड़ी-दौड़ी याबेबिरी तक आ पहुँची और नदी में पैर डुबोकर ज़ोर से बोली, "अरे राया! ख़बरदार! देखो तुम्हारा दोस्त ज़ख़्मी हालत में आ रहा है।"

राया ने उसकी बात सुनी तो वे चिन्तित हो किनारे पर आ जमा हुईं और लोमड़ी से पूछने लगीं, "क्या हुआ? कहाँ है आदमी?"

1. राया–एक प्रकार की मछली, जिसका आकार चपटा होता है। अंग्रेज़ी में इसे स्टिंग रे कहते हैं।

"वो देखो, आ रहा है!" लोमड़ी फिर चिल्लाई, "वह एक शेर से भिड़ गया था! शेर भी दौड़ा हुआ आ रहा है! वह ज़रूर नदी पार कर टापू की ओर जाना चाहेगा! उसे जाने देना, वह एक नेक आदमी है।"

"हम जानते हैं! हम जानते हैं, हम उसे ज़रूर रास्ता देंगे।" राया ने जबाव दिया, "लेकिन वो जो शेर है, उसे हम नहीं जाने देंगे।"

"उससे ज़रा सँभल के!" लोमड़ी ने चेताया, "यह मत भूलना कि वह एक शेर है।" और छलाँग मारकर लोमड़ी फिर से पहाड़ी की ओर भाग निकली।

वह गई ही थी कि आदमी टहनियों के बीच से रास्ता साफ़ करता हुआ आ पहुँचा। वह लहूलुहान था और उसके कपड़े भी फटे हुए थे। चेहरे से बहता हुआ ख़ून छाती से होता हुआ पैर तक टपक रहा था और पैंट से होता हुआ रेत पर गिर रहा था, वह ज़ख़्मी था; इसलिए लड़खड़ाता हुआ नदी किनारे पहुँचा और पानी में उतर गया। उसने पानी में पैर रखा ही था कि झुंड में इकट्ठा राया छिटक गईं और उसके लिए रास्ता साफ़ कर दिया। आदमी छाती तक पानी में डूबा हुआ नदी पार करता टापू तक आ पहुँचा, लेकिन एक भी राया ने काटना तो दूर उसे छुआ तक नहीं। पहुँचते ही वह बेहोश हो रेत पर गिर पड़ा। उसके शरीर से बहुत सारा ख़ून बह चुका था।

राया को अभी मौक़ा भी न मिला था, कि वे अपने बेहाल दोस्त की हालत पर अफ़सोस करतीं, तभी एक दमदार दहाड़ ने उनका ध्यान फिर पानी की ओर खींच लिया।

"शेर आ गया! शेर आ गया!" सब चीख़ने लगीं और तीर-सी तेज़ी के साथ उन्होंने किनारे की ओर दौड़ लगा दी।

वह शेर, जिसके साथ आदमी की भिड़ंत हुई थी, उसका पीछा करता हुआ वहीं याबेबिरी के किनारे पर आ पहुँचा था। वह जानवर भी बहुत ज़ख़्मी हालत में था। उसके सारे शरीर से ख़ून बह रहा था। उसने जैसे ही टापू की रेत पर निढाल पड़े आदमी को देखा तो गरजती दहाड़ के साथ पानी में छलाँग मार दी। वह उसका पूरी तरह से ख़ात्मा कर देना चाहता था।

लेकिन उसका एक ही पैर पानी में पड़ा होगा कि उसे लगा जैसे दर्जनों कीलें उसके पैर में ठोक दी गई हों। वह उछलकर पीछे हट गया। वह और कोई नहीं राया ही थीं, जिन्होंने नदी के रास्ते पर रोक लगा दी थी और अपनी पूँछ के काँटों से उस पर पूरी शक्ति से वार किया था।

शेर दर्द से बिलबिलाता हुआ पैर हवा में उठाए रह गया। उसने किनारे के पानी में रेत ही रेत भरती देखी, जैसे कि किसी ने तले की रेत को बुरी तरह से मथ दिया हो। तब उसकी समझ में आया कि यह काम तो राया का है, जो उसे पार जाने नहीं देना चाहती हैं। वह गुस्से से झुँझलाकर चिल्लाया।

"मालूम है मुझे, यहाँ क्या हो रहा है? यह करतूत तुम राया की ही है न! हटो मेरे रास्ते से! चलो हटो!"

"नहीं हटेंगे! वह एक नेक आदमी है! उसे मारना ग़लत होगा।"

"उसने मुझे घायल किया है।"

"आप दोनों ने एक दूसरे को घायल किया है। यह आप दोनों का पहाड़ी वाला मामला है। यहाँ वह हमारे आश्रय में है। आप नहीं जा सकते हैं।"

"जाऊँगा!" आख़िरी बार शेर दहाड़ा।

"ना ही कभी भी नहीं!" राया बोली।

(उन्होंने "ना ही कभी भी नहीं" इसलिए बोला, क्योंकि मिसियोनेस के लोगों की ही तरह जो लोग गुआरानी बोलते हैं, वे इसी तरह बोलते हैं।)

"आओ चलो फिर, देख लेते हैं।"

शेर फिर दहाड़ा और उसने पीछे क़दम लेकर छलाँग मारने की तैयारी की।

शेर यह जानता था कि राया हमेशा ही किनारे पर रहती हैं। वह यह सोच रहा था कि अगर वह लंबी छलाँग मार सके तो शायद नदी के बीच में उसे इतनी सारी राया न मिलें। इस तरह वह उस बेहोश आदमी को खाने में कामयाब होगा।

लेकिन राया ने यह बात पहले से ही सोच ली थीं और वे दौड़कर नदी के बीच पहुँच गईं और बात फैला दी।

"किनारा छोड़ दो!" पानी के नीचे से ही चिल्लाईं, "अंदर की ओर बढ़ो! नदी की ओर! बहाव की ओर!"

और पल भर में ही राया की फ़ौज नदी के बीच रास्ता रोकने के लिए जमा हो गई। उसी समय शेर ने एक लंबी छलाँग मारी और नदी के बीचोंबीच जा गिरा। जैसे ही वह गिरा उसे बड़ी ख़ुशी हुई यह जानकर कि उसे एक भी डंक नहीं लगा है और उसे लगा कि सारी राया धोखे में आकर किनारे से ही लगी रह गई हैं।

लेकिन उसने एक क़दम बढ़ाया ही था कि उसपर सुइयों की बारिश हो गई और दर्द के मारे बिलबिला उठा। वह खड़ा-खड़ा धोखा खा गया। यह वही राया थीं। उन्होंने उसके पैरों को डंक मार मारकर छलनी कर दिया।

शेर ने फिर भी चाहा कि वह आगे बढ़े, लेकिन दर्द ऐसा भंयकर था कि वह पलटकर फिर किनारे की ओर सरपट भाग खड़ा हुआ। फिर वह रेत पर पीठ के बल जा पसरा। अब उससे और दर्द नहीं सहा जाता था। उसकी छाती फूल रही थी, जैसे कि वह बेहद थक गया हो।

हुआ यह था कि उसके शरीर में राया का ज़हर फैल चुका था।

शेर को हरा देने के बाद भी राया को चैन नहीं पड़ा, क्योंकि उन्हें यह डर था कि शेरनी आ जाएगी, और बाक़ी के शेर भी आ जाएँगे, फिर और भी सारे शेर...। वे ज़्यादा देर तक रास्ता नहीं रोक सकती थीं।

हुआ भी ऐसा ही। पहाड़ी फिर से गर्जना से गूँज उठी और शेरनी प्रकट हो गई। वह शेर को पीठ के बल रेत पर पड़े देख गुस्से से पागल हो गई। उसने भी नदी किनारे राया की उठाई हुई रेत देखी तो वह वहाँ गई और गुस्से से पानी में लगभग नाक छुआते हुए चिल्लाई।

"राया! मुझे रास्ता दो!"

"रास्ता बंद है।" राया ने जवाब दिया।

"एक भी राया की दुम नहीं बचेगी, यदि मुझे रास्ता न मिला तो।" वह दहाड़ी।

"हमारी पूँछ भले ही चली जाए, हम रास्ता नहीं देंगे।" उन्होंने जवाब दिया।

"आख़िरी बार बोल रही हूँ, रास्ता दो!"

"ना ही कभी भी नहीं!" राया चिल्ला पड़ीं।

शेरनी गुस्से से पागल थी। अनजाने ही, पानी में उसका एक पैर चला गया। तभी एक राया ने धीरे से पास जाकर उसके नाख़ूनों के बीच डंक मार दिया। उसकी दर्द से निकली चीख़ के जवाब में राया ने चुपके से हँसते हुए कहा, "लगता है, पूँछ तो अब भी है हमारे पास!"

लेकिन शेरनी को एक ख़याल आया और उस ही को दिमाग़ में घुमाते, भवों के बलों पर नचाते वह वहाँ से हटने लगी। नदी के किनारे-किनारे ऊपर की ओर चुप-चाप वह बढ़ती चली गई।

मज़े की बात तो यह थी कि इस बार भी राया को अपने दुश्मन की इस चाल का पता चला गया।

दुश्मन की चाल थी नदी को दूसरी जगह से पार करना, ताकि राया के समझ में न आ पाए कि रास्ता रोका जाए तो कहाँ से। यह सोचकर राया बड़ी चिन्ता में पड़ गईं।

"वह नदी को और ऊपर से पार करने की सोच रही है।" वे चीख पड़ीं, "हम नहीं चाहते कि वह उस आदमी को मार डाले। हमें अपने दोस्त की रक्षा करनी ही होगी।"

और वे तेज़-तेज़ यहाँ से वहाँ तैरने लगीं, जिससे कि पानी में फिर उफान आ गया।

"हम अब करें क्या?" वे बोलीं, "हमे तो कोई बढ़िया तरकीब सूझ ही नहीं रही है।"

इससे पहले कि वहाँ राया को पता चले कि उन्हें हर हाल में रास्ता रोकना है, शेरनी तो रास्ता पार भी कर जाएगी।

उनकी समझ ही नहीं आ रहा था कि वे करें तो क्या। तभी एक राया को एक तरकीब सूझी।

"तो ठीक है! दोरादो को भेजते हैं। दोरादो हमारी दोस्त हैं। वे तैरती भी सबसे तेज़ हैं।"

"यही ठीक होगा।" सभी चिल्ला पड़ीं, "दोरादो को ही जाने दो।"

पल भर में ही बात फैल गई और अगले ही पल आठ दस क़तारों में दोरादो तैनात दिखाई दीं। वह पूरी की पूरी दोरादो की फ़ौज थी, जो ग़ज़ब की तेज़ी के साथ ऊपर की ओर चली जा रही थीं और अपने पीछे पानी की सतह पर तोरपेदो की-सी गहरी धार छोड़ती जा रही थीं।

बावजूद इन सबके, उन्हें मुश्किल से इतना समय मिल पाया कि वे शेरों का रास्ता रोकने की सूचना दे पातीं। शेरनी पानी में उतर चुकी थी और टापू तक पहुँचने ही वाली थी।

लेकिन राया दौड़ती हुईं उस पार पहुँच गईं और जैसे ही शेरनी ने क़दम बढ़ाया उन्होंने उसके पैरों पर हमला बोल दिया और डंक मार-मारकर उसे छलनी कर दिया। वह जानवर तो दर्द से बौखला

उठा। दहाड़ता, छलाँगें मारता, पानी में फव्वारे उड़ाता वह भागा। लेकिन राया ने उसके पैरों को बख़्शा नहीं। उन्होंने उसका रास्ता इस तरह रोका कि शेरनी पलटकर फिर किनारे की ओर अपने मोटे-मोटे सूजे पैरों पर दौड़ पड़ी। इस जगह से जाकर भी वह आदमी उसके हाथ नहीं लगनेवाला था।

अब राया भी बहुत थक चुकी थीं; और उससे भी बुरी बात यह थी कि शेर और शेरनी उठ चुके थे और अभी-अभी पहाड़ी में ओझल हुए थे।

ये अब क्या करनेवाले हैं? इस सवाल ने राया के बीच एक चुप्पी ला दी और आपस में लंबी बातचीत के बाद उन्होंने कहा, "अब आई बात समझ में। ये बाक़ी के शेरों को इकट्ठा कर साथ लाने वाले हैं। सारे के सारे शेर साथ आएँगे और पार कर जाएँगे।"

"ना ही कभी भी नहीं!" युवा राया, जिन्हें जीवन का अनुभव कम था, जोश में चीख़ पड़ीं।

"हाँ, पार कर जाएँगे वे।" बूढ़ी राया दुःखी मन से बोली, "अगर उतने सारे आ ही गए, तब तो जरूर पार कर जाएँगे...चलो हम अपने दोस्त से ही बात करके देखते हैं।" अब तक उन्हें उससे मिलने का समय ही नहीं मिल पाया था।

वे रास्ते की रक्षा में जो लगी रह गई थीं।

आदमी लेटा ही रहा। उसके शरीर से बहुत सारा ख़ून जो बह चुका था, लेकिन अब वह बोल सकता था और थोड़ा बहुत हिल भी सकता था।

राया ने फटाफट उसे सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने उसे बताया कि किस तरह उन्होंने नदी के रास्ते की रक्षा की थी, जब शेर नदी पार कर उसे खा जाना चाहते थे। घायल आदमी उनकी ऐसी दोस्ती देखकर भावविभोर हो गया और प्यार से अपने पास की राया की ओर एक हाथ बढ़ाकर बोला, "अब कोई रास्ता नहीं है। अगर शेर बहुत सारे हुए और उन्होंने नदी को पार करना चाहा तो कर ही जाएँगे।"

"नहीं, नहीं पार कर पाएँगे।" छोटी राया बोली, "आप हमारे दोस्त हैं और वे पार नहीं करेंगे।"

"वे पार कर जाएँगे मेरी नन्ही दोस्तो।" आदमी बोला, फिर धीरे से कहा, "एक ही तरकीब है। किसी को विनचेस्टर[1] लाने के लिए घर भेजो और उसे बहुत-सी गोलियों के साथ बुलवाओ। लेकिन नदी में तो मछलियों को छोड़कर मेरा और कोई दोस्त नहीं है...और आप तो ज़मीन पर चलना जानती नहीं हैं।"

"फिर हम क्या करें?" राया ने परेशान होकर कहा।

"देखते हैं।"... आदमी कुछ याद करता हुआ माथे पर हाथ फेरते हुए बोला, "मेरा एक दोस्त हुआ करता था–एक नन्हा ऊदबिलाव, जो मेरे घर में पला-बढ़ा था और मेरे बच्चों के साथ खेला करता था–एक दिन वह पहाड़ी पर लौट आया और शायद अब भी यहीं रहता है, यावेबिरी में... पर कहाँ, यह पता नहीं।"

---

1. विनचेस्टर–दो नलीवाली बंदूक़



राया ख़ुशी से चिल्ला उठीं, "हमें पता है! हम उसे जानते हैं। वह टापू की चोटी पर रहता है। उसने एक बार हमें आपके बारे में बताया था! हम अभी उसे बुलावा भेजते हैं।"

उन्होंने जैसा कहा, वैसा ही किया। एक बड़ी दोरादो नदी में नीचे की ओर चल पड़ी ऊदबिलाव की खोज में और तब तक आदमी ने ख़ून की सूखी बूँद को हथेली पर स्याही बनाने के लिए घोला और एक मछली के काँटे को क़लम बनाकर एक सूखी पत्ती को काग़ज़ की तरह इस्तेमाल करते हुए चिट्ठी लिखी–ऊदबिलाव के साथ मुझे विनचेस्टर और 25 गोलियों का पूरा डिब्बा भिजवा दो।

उसने चिट्ठी ख़त्म की ही थी कि सारी पहाड़ी ज़बरदस्त गर्जना से गूँज उठी। सारे के सारे शेर लड़ाई के लिए तैयार, चले आ रहे थे। राया चिट्ठी पानी की सतह से ऊपर उठाए लिए जा रही थीं, ताकि वह भीग न जाए। उन्होंने वह ऊदबिलाव को दी, जो उसे लेकर आदमी के घर की ओर चल पड़ा।

अब समय आ गया था। शेरों की गर्जना अब भी दूर थी, मगर तेज़ी से पास आती जा रही थी। राया ने फटाफट दोरादो को जमा किया, जो कि आगे के आदेश का इंतजार कर रही थीं। वे चिल्ला कर बोलीं, "सावधान साथियो! सारी नदी पर दौड़ो और सभी को ख़बरदार कर दो। सभी राया फ़ौरन तैनात हो जाएँ। सभी टापू को घेर लें। देखें तो कैसे पार करते हैं वे!"

और दोरादो की फ़ौज नदी की सतह पर अपनी तेज़ गति से धारियाँ बनाती हुई चल पड़ी।

सारी याबेबिरी में एक भी राया न बची, जिसे कि टापू को घेरकर जमा होने का आदेश न मिला हो। चारों दिशाओं से, पत्थरों के बीच से, कीचड़ से, छोटी नदियों के संगम से और सारी नदी पर से सारी राया शेरों का रास्ता रोकने के लिए पहुँच गईं। टापू के आगे से दोरादो तेज़ी से आती जाती दिखाई दे रही थीं।

अब समय हो गया था। फिर एक भारी दहाड़ सुनाई दी, जिससे किनारे का पानी तक थर्रा गया और शेर किनारे पर आ खड़े हुए।

वे बहुत सारे थे। लगता था जैसे कि मिसयोनेस के सारे शेर वहीं आकर जमा हो गए हों। लेकिन याबेबिरी भी तो राया से उबल रही थी, जो किनारे की ओर लपक पड़ी थीं। नदी के रास्ते को हर जगह पर रोकना था।

"शेरों को रास्ता दो!"

"रास्ता नहीं मिलेगा!" राया ने जवाब दिया।

"फिर कहते हैं; रास्ता दो।"

"नहीं जा सकते।"

"न कोई राया और न ही कोई राया का बच्चा ही बचेगा, अगर रास्ता न दिया तो।"

"हो सकता है।" राया बोली, "पर ना ही कोई शेर और न उनके पोते और न ही दुनिया भर के कोई शेर यहाँ से पार कर पाएगा।"

राया के यह कहने पर शेर फिर दहाड़े, "हम रास्ता माँग रहे हैं।"

"ना ही कभी भी नहीं!"

और तब लड़ाई शुरू हुई। लंबी छलाँग मारकर शेर पानी में उतर आए और सीधा रायाओं की घनी जमात पर जा गिरे। राया ने भी डंक मार-मारकर उन्हें छलनी कर दिया। हर वार पर शेर दर्द की चीख़ें मारते थे। राया भी शेरों के नखों से ज़ख़्मी हो चारों तरफ़ उड़ती दिखाई देती थीं।

याबेबिरी एक ख़ून की नदी-सी लगने लगी। हज़ारों राया मारी गईं।...लेकिन शेर भी काफ़ी ज़ख़्मी हुए। बुरी तरह सूजे हुए वे फिर अपने ज़ख़्म चाटते-सहलाते किनारे की तरफ़ जाने पर मजबूर हो गए। शेरों के पैरों तले कुचले, मारे जाने पर भी राया ने हार न मानी। वे फिर जमा हो रास्ते की रक्षा पर तैनात हो गईं। वे हवा में उछाल दी जातीं, फिर पानी पर आ गिरतीं और तुरंत शेरों से लड़ने फिर तैनात हो जातीं।

यह घमासान लड़ाई आधे घंटे तक चली। अंत में शेर पस्त होकर फिर किनारे की रेत पर थककर चूर दर्द से कराहते बैठ गए। उनमें से एक भी पार नहीं जा पाया था।

लेकिन राया भी थककर पस्त हो चुकी थीं, बहुत-सी मारी भी जा चुकी थीं और जो जीवित बची थीं वे कहने लगीं, "हम इस तरह के दो हमले बर्दाश्त नहीं कर पाएँगी। दोरादा को मदद के लिए अब जाना ही होगा! याबेबिरी की सारी राया को यहाँ आना होगा अब।"

दोरादा तेज़ गति से नदी की सतह को इस तरह चीरती हुई चल पड़ीं कि उनके पीछे पानी पर धारियाँ छूटती जाती थीं।

राया फिर आदमी से मिलने पहुँची, "अब हम और देर नहीं रोक पाएँगी उन्हें!" वे दुःखी मन से बोलीं। कुछ तो रोने लगीं, क्योंकि वे अपने दोस्त को बचाने में नाकाम होने जा रही थीं।

"राया अब आप लोग चले जाइए।" घायल आदमी बोला, "छोड़ दीजिए मुझे अकेला। अब बहुत कर चुकीं आप मेरे लिए। आने दीजिए शेरों को।"

"ना ही कभी भी नहीं!" राया एक सुर में चीख़ पड़ीं, "जब तक एक भी राया हमारी याबेबिरी में जीवित रहेगी, हम उस आदमी की रक्षा पर तत्पर रहेंगी, जिसने हमारी रक्षा की थी।"

तब आदमी भावविभोर होकर बोला, "राया! मैं तो अब मरा, तब मरा; अब तो मुझसे बोला भी नहीं जा रहा है, लेकिन एक वादा है आपसे। जैसे ही विनचेस्टर मेरे हाथ आएगी, हम ऐसी आतिशबाज़ियाँ करेंगे कि लंबे समय तक जश्न चलता रहेगा। यह मेरा वादा है आपसे।"

"हमें आप पर विश्वास है!" उत्साह भरे स्वर में राया बोलीं।

लेकिन बात ख़त्म भी न हो पाई थी कि लड़ाई फिर छिड़ गई। शेर सुस्ता चुके थे। अब फिर से नई फुर्ती के साथ हमले के लिए तैयार खड़े थे। वे दहाड़े, "आख़िरी बार कहते हैं, रास्ता छोड़ो!"

"ना ही कभी भी नहीं!" राया भी किनारे पर लपकती हुई बोलीं। इतने में ही शेर पानी में कूद पड़े और फिर लड़ाई छिड़ गई। सारी की सारी याबेबिरी ऊपर से नीचे तक ख़ून से लाल हो गई। और किनारे पर आनेवाला पानी का फेन भी लाल हो गया।

कभी राया उछाली, मारी जाती थीं तो कभी शेर दर्द से दहाड़ते थे; पर हार दोनों में से कोई नहीं मानता था।

शेर पीछे हटने के बजाय आगे की ओर बढ़ रहे थे। दोरादो का नदी पर ऊपर नीचे दौड़-दौड़कर राया इकट्ठा करना भी व्यर्थ जा रहा था। राया अब बची ही नहीं थीं। सारी राया तो टापू के सामने खड़ी लड़ रही थीं और उनमें से आधी तो मारी जा चुकी थीं। जो बची भी थीं तो वे बुरी तरह ज़ख़्मी थीं।

उन्हें लग रहा था कि अब वे एक पल भी और शेरों को नहीं रोक पाएँगी और वे पार कर जाएँगे। उन्हें मरना मंजूर था, लेकिन शत्रु के आगे हथियार डालना मंजूर नहीं था। वे फिर से हिम्मत जुटाकर शेरों पर टूट पड़ीं। पर सब व्यर्थ था। पाँच शेर तेज़ी से तैरते हुए टापू की ओर बढ़ चुके थे। वे व्याकुल होकर चिल्लाईं, "टापू की ओर! चलो सब उस किनारे चलो।"

लेकिन अफ़सोस! देर हो चुकी थी। दो शेर और तैरते हुए चल पड़े थे और पल भर में ही बाक़ी शेर भी नदी के बीच पहुँच चुके थे। अब तो वहाँ केवल उनके सिर ही पानी की सतह पर नज़र आ रहे थे।

लेकिन उसी समय एक जानवर, एक बेचारा नन्हा-सा रंग-बिरंगे बालोंवाला जानवर भी तेज़ी से याबेबिरी को तैरता हुआ पार कर रहा था। वह ऊदबिलाव था, जो कि विनचेस्टर और गोलियों को भीगने से बचाने के लिए सिर पर रख टापू की ओर चला जा रहा था।

आदमी खुशी से चिल्ला उठा, क्योंकि अब भी उसके पास मौक़ा था, लड़ाई में राया के हाथ मज़बूत करने का। उसने ऊदबिलाव से कहा कि वह उसे अपने सिर से धकेलकर पीठ के बल पलटा दे, क्योंकि वह ख़ुद नहीं पलट पा रहा था। तब उसने फटाफट राया की-सी फुर्ती के साथ विनचेस्टर में गोलियाँ भरीं।

बेचारी राया कुचली, ज़ख़्मी, घायल हालत में असहाय होकर देख रही थीं, कि किस तरह से शेर उन्हें हराकर उनके दोस्त को खाने जा रहे थे, तभी उन्होंने भगदड़ देखी।

जो पहला शेर टापू की रेत पर पैर रखनेवाला था, वह एक झटके से उछला और ढेर हो गया। उसके माथे पर एक बड़ा-सा छेद हो गया था।

"वाह वाह! वाह वाह!" राया ख़ुशी से नाच पड़ीं, "आदमी को विनचेस्टर मिल गई। हम बच गए।"

और ख़ुशी के मारे नाच-नाचकर उन्होंने पानी को बुरी तरह से मथ दिया। लेकिन आदमी एकदम शांत, धीर होकर गोलियाँ दाग़ता गया और हर गोली पर एक शेर की मौत लिखी होती थी। हर शेर की अंतिम दहाड़ पर राया पूँछ उछाल-उछालकर ख़ुशी मनाती थीं।

एक के बाद एक, जैसे कि बिजली टूट पड़ी हो उनपर। शेर, गोलियों के शिकार हो, ढेर होते जा रहे थे। यह खेल केवल दो मिनट भर ही चला। एक के बाद एक वे पानी में समाते चले गए। मछलियों का भोजन बनते चले गए शेरों के शव। थोड़ी देर बाद जब कुछ शव सतह पर आ गए, तब उन्हें दोरादो खाते हुए, मस्ती में पानी पर गोते मारते हुए, पराना तक लिए चली गईं।

राया के ढेर सारे बच्चे हुआ करते हैं। कुछ ही दिनों में वे फिर से उतनी ही सारी हो गईं, जितनी पहले थीं। आदमी भी स्वस्थ हो गया। वह राया का बड़ा आभारी था, इसलिए वह जाकर टापू पर ही रहने लगा।

वहाँ वह गर्मी की रातों में रेत पर लेटा चाँदनी में धुआँ उड़ाया करता। राया अपने नन्हे बच्चों को, जो उसे जानते नहीं थे, उस भयंकर युद्ध की कहानियाँ सुनातीं, जो कि उन्होंने उस आदमी के साथ मिलकर शेरों से लड़ा था।

आलसी मधुमक्खी

एक बार की बात है। एक छत्ते में एक मधुमक्खी रहती थी, जो काम नहीं करना चाहती थी। बात यूँ थी कि वह पेड़-पेड़ उड़ती और फूलों का रस चखती, पर उस रस को बचाकर शहद बनाने के बजाय वह उसे पूरा ही पी जाती थी।

वह एक आलसी मधुमक्खी थी। हर सुबह जब सूरज के ताप से हवा में थोड़ी गर्माहट आती, हमारी मधुमक्खी छत्ते के दरवाजे से बाहर झाँकती, सुहावना मौसम देख वह अपने पैरों से अपने बाल झाड़ती, जैसा कि मक्खियाँ किया करती हैं, और फिर मौसम का मज़ा लेने फुर्र से उड़ जाती। वह भिनभिनाती, मंडराती, छत्ते में घुसती, फिर निकल आती और इस तरह सारा दिन बिता देती। वहीं अन्य मधुमक्खियाँ जी तोड़ मेहनत करतीं, ताकि छत्ता शहद से भर जाए, क्योंकि वही तो नन्ही नवजात मधुमक्खियों का भोजन होता है।

मधुमक्खियाँ स्वभाव से गंभीर होती हैं। उन्हें अपनी आलसी बहन का व्यवहार बुरा लगता था। छत्ते के दरवाज़े पर कुछ मधुमक्खियाँ हमेशा ही पहरे पर तैनात रहती हैं, ताकि अन्य कीड़े न घुसने पाएँ। ये मधुक्खियाँ आम तौर पर बूढ़ी होती हैं और उन्हें जीवन का बड़ा अनुभव होता है। उनकी पीठ पर बाल नहीं होते हैं, क्योंकि इतनी बार छत्ते के दरवाज़े से भीतर बाहर करने से रगड़ खाकर सभी बाल गिर चुके होते हैं।

एक दिन जैसे ही आलसी मक्खी छत्ते में घुसनेवाली थी, उन्होंने उसे रोककर कहा, "बहन, तुम्हारे लिए काम करना ज़रूरी है, क्योंकि हम मधुमक्खियों के लिए काम करना ज़रूरी है।"

हमारी मधुमक्खी ने जवाब दिया, "मैं सारा दिन उड़-उड़कर थक जाती हूँ।"

"बात थकावट की नहीं है।" उन्होंने उत्तर दिया, "बल्कि बात यह है कि तुम्हें कुछ काम करना चाहिए। यह पहली चेतावनी है, जो तुम्हें दी जा रही है।"

यह कह उन्होंने उसे भीतर जाने दिया, लेकिन आलसी मधुमक्खी ने अपनी ग़लती नहीं सुधारी। नतीजा यह हुआ कि अगले दिन शाम के वक़्त जो मधुमक्खियाँ पहरे पर थीं, उन्होंने उससे कहा, "बहन काम करो।"

उसने चट से जवाब दिया, "किसी दिन कर लूँगी।"

"बात किसी दिन करने की नहीं है।" उन्होंने कहा, "बल्कि कल ही करो। यह बात समझ लो।"

और उन्होंने उसे अंदर जाने दिया। शाम होते ही फिर वही हुआ। इससे पहले कि वे उससे कुछ कहतीं, हमारी मधुमक्खी बोल पड़ी, "हाँ हाँ बहनो! मुझे याद है अपना वादा।"

"यह बात वादा याद रखने की नहीं है।" वे बोलीं, "बल्कि काम करने की है। आज 19 अप्रैल है। कोशिश करना कि कम से कम एक बूँद शहद तो लाओ। अभी आओ।"

यह कह वे दरवाज़े से हट गईं और उन्होंने उसे अंदर जाने दिया।

लेकिन 20 अप्रैल भी वैसे ही बेकार चला गया, जैसे कि अन्य दिन जाते थे। अंतर बस यही था कि सूरज ढलते ही मौसम ख़राब हो गया और ठंडी हवा बहने लगी।

आलसी मधुमक्खी जल्दी-जल्दी अपने छत्ते की ओर यह सोचती हुई लौटने लगी कि वहाँ अंदर कितना अच्छा गर्म-गर्म होगा। पर जब उसने अंदर जाना चाहा तो पहरेदार मधुमक्खियों ने उसे रोक दिया।

"तुम अंदर नहीं जा सकती।" उन्होंने रूखेपन से कहा।

"पर मैं अंदर जाना चाहती हूँ!" हमारी मधुमक्खी ने ज़ोर देकर कहा, "यह मेरा छत्ता है।"

"यह छत्ता मेहनती मधुमक्खियों का है।" उन्होंने जवाब दिया, "आलसी मधुमक्खियों का अंदर जाना मना है।"

"कल मैं पक्का काम करूँगी।" मधुमक्खी ने आश्वासन दिलाना चाहा।

"जो काम नहीं करते, उनके लिए कल नहीं होता।" उन मधुमक्खियों ने जवाब दिया, क्योंकि हर बूढ़ी मधुमक्खी की तरह उन्हें भी दर्शन का ख़ूब ज्ञान था।

और यह कह उन्होंने उसे बाहर ढकेल दिया।

मधुमक्खी की समझ में नहीं आ रहा था कि उसे क्या करना चाहिए। वह यूँ ही यहाँ-वहाँ उड़ने लगी। लेकिन रात होने लगी और कुछ भी दिखाई देना मुश्किल होने लगा। उसने एक पत्ते से टिक जाना चाहा, पर वह ज़मीन पर जा गिरी। ठंडी हवा से उसका शरीर अकड़ गया था और उड़ना मुश्किल हो गया था।

तब वह ज़मीन पर रेंग-रेंगकर तिनकों, पत्थरों पर से, जो उसे पहाड़ समान लग रहे थे, चढ़ उतरकर छत्ते के दरवाज़े तक आई। तभी बारिश की ठंडी बूँदें पड़ने लगीं।

"हे मेरे भगवान!" वह बेचारी बेसहारा बोल पड़ी, "बारिश होनेवाली है और अब मैं ठंड से मारी जाऊँगी।"

और उसने फिर भीतर घुसने की कोशिश की।

लेकिन एक बार फिर उसका रास्ता रोक दिया गया।

"मुझे माफ कर दो।" वह गिड़गिड़ाई, "मुझे अंदर आने दो!"

"अब बहुत देर हो चुकी है।" उन्होंने जवाब दिया।

"मुझ पर दया करो बहनो! मुझे नींद आ रही है।"

"तब भी, अब बहुत देर हो चुकी है।"

"बहनो, भगवान के लिए! मुझे ठंड लग रही है।"

"असंभव!"

"बस आख़िरी बार! मैं मर जाऊँगी।" तब वे बोलीं, "नहीं, मरोगी नहीं। लेकिन हाँ, एक ही रात में यह सीख ज़रूर जाओगी कि मेहनत से कमाया हुआ आराम क्या होता है। अब जाओ।"

और उन्होंने उसे वहाँ से निकाल बाहर किया।

गीले पंख लिए तब ठंड से काँपती हुई, लड़खड़ाती हुई वह मधुमक्खी ख़ुद को घसीटती हुई गई। वह एक गड्ढे में लुढ़कती हुई जा गिरी और गिरती-गिरती एक खोह की गहराई में गिरती चली गई।

उसे लगा कि वह कभी उस खोह के तले तक पहुँचेगी ही नहीं। अंततः वह तले तक पहुँच गई और एक साँप के सामने ज़ोर से जा गिरी। वह एक हरे रंग का साँप था, जिसकी पीठ पर ईंट-सी लाल धारियाँ थीं। वह उसे गुस्से भरी आँखों से घूर रहा था और उस पर झपट पड़ने को तैयार था।

असल में वह गुफा एक ऐसे पेड़ की खोह थी, जो कभी का गिर चुका था और उस साँप ने वहाँ अपना बिल बना लिया था।

अब जो साँप होते हैं, वे मधुमक्खियाँ बड़े चाव से खाते हैं। इसलिए बेचारी मधुमक्खी ख़ुद को अपने शत्रु के सामने पाकर आँख मींचकर फुसफुसाने लगी, "प्यारी ज़िन्दगी! अलविदा! यह आख़िरी बार है, जब मैं रौशनी देख रही हूँ!"

लेकिन अचंभा देखो कि साँप ने सिर्फ़ उसे छोड़ ही नहीं दिया, बल्कि उससे बोला, "क्यों मधुमक्खी जी? आप इस समय यहाँ हैं, इससे लगता तो नहीं है कि आप बहुत मेहनती होंगी।"

मधुमक्खी ने धीरे से जवाब दिया, "हाँ आप सही हैं और इसमें दोष भी मेरा ही है।"

"यदि ऐसा ही है।" साँप ने चिढ़ाते हुए कहा, "तो मैं आज इस दुनिया से एक बेकार जीव को हटा दूँगा। मैं तुम्हें खा जाऊँगा, मधुमक्खी रानी।"

तब मधुमक्खी काँपने लगी और बोली, "यह ठीक नहीं है। बिलकुल भी ठीक नहीं है। यह ठीक नहीं है कि आप मुझे खाएँ, क्योंकि आप मुझसे ज़्यादा ताक़तवर हैं। आदमी जानते हैं कि इन्साफ़ क्या होता है।"

"अच्छा!" साँप ने चिढ़ते हुए कहा, "क्या तुम आदमियों को अच्छी तरह जानती हो? तुम समझती हो कि वे आदमी, जो कि तुम्हारा शहद तुमसे छीन लेते हैं, वे इंसाफ़पसंद होते हैं? बेवक़ूफ़ कहीं की!"

"वे इसलिए नहीं लेते हैं हमारा शहद।" मधुमक्खी ने जवाब दिया।

"तो फिर क्यों?"

“क्योंकि वे ज़्यादा समझदार होते हैं।”

मधुमक्खी के यह कहने पर साँप ज़ोर से हँस पड़ा और बोला, “अच्छी बात है! अब चाहे सही हो या ग़लत, मैं तो तुम्हें खाऊँगा ही। चलो तैयार हो जाओ।” और झपटने के लिए वह पीछे की ओर तन गया, पर तभी मधुमक्खी बोल पड़ी, “आप ऐसा इसलिए कर रहे हो, क्योंकि आप मुझसे कम समझदार हो।”

“मैं और तुम जैसे पिद्दी से कम समझदार?” कह साँप हँस पड़ा।

“ऐसा ही है।” मधुमक्खी ने ज़ोर देकर कहा।

“ठीक है।” साँप ने कहा, “तो फिर आओ, चलो आज़मा लें। हम दोनों ज़ोर आज़माइश करेंगे। जो सबसे अलग और निराली हरकत करेगा, जीत उसी की होगी। मैं जीता तो तुमको खा जाऊँगा।”

“और मैं जीती तो?” मधुमक्खी ने पूछा।

“अगर तुम जीतीं तो तुम आराम से यहाँ रात बिता सकोगी, जब तक कि दिन नहीं निकल आए। लगी शर्त!”

“लगी शर्त!” मधुमक्खी ने जवाब दिया।

साँप फिर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा, क्योंकि उसे एक ऐसी बात सूझी थी, जो कि कोई मधुमक्खी कर ही नहीं सकती थी। तुम ख़ुद ही पढ़ लो, उसने क्या किया।

वह अचानक ही इतनी तेज़ी से बाहर गया कि मधुंमक्खी को पता भी नहीं चला। और यूकलिप्टस पेड़ की फली लिए वापस लौट आया। वह यूकलिप्टस का पेड़ छत्ते की बग़ल में ही था और उसे छाया देता था।

छोटे बच्चे यूकलिप्टस की फली को लट्टू की तरह नचाते हैं और उन्हें यूकलिप्टस का लट्टू कहते हैं।

“अब देखो मैं क्या करता हूँ।” साँप बोला, “ध्यान से देखना! देखो!”

उसने ख़ुद को फली के इर्द-गिर्द लपेट लिया, जैसे कि वह कोई चिड़िया हो और इस तेज़ी से लपेट को खोला कि फली पागल लट्टू की तरह नाच पड़ी और बजने लगी।

साँप ख़ूब हँसा, और बात थी भी बड़ी निराली। कभी किसी मधुमक्खी ने न ऐसा किया था और न ही वह इस तरह लटटू नचा ही सकती थी।

जब लटटू रुककर गिर पड़ा, तब मधुमक्खी ने कहा, “यह तो बहुत ही बढ़िया करतब था और मैं तो ऐसा कभी कर ही नहीं सकती।”

“तब फिर मैं तुम्हें खा जाता हूँ।” साँप चहककर बोला।

“ज़रा ठहरो! मैं ऐसा नहीं कर सकती, लेकिन दूसरा करतब कर सकती हूँ, जो कोई नहीं कर सकता।”

“वह क्या है?”

“ग़ायब होना!”



"क्या?" आश्चर्य से उछलकर साँप ने पूछा।

"ग़ायब, बिना यहाँ से बाहर गए?"

"बिना बाहर गए।"

"और बिना ज़मीन में छिपे?"

"बिना ज़मीन में छिपे।"

"ठीक है तो फिर करके दिखाओ। याद रहे, यदि नहीं कर पाईं तो मैं तुम्हें खा जाऊँगा।" साँप ने कहा।

बात यूँ थी कि जब लट्टू घूम रहा था, तब मधुमक्खी को मौक़ा मिल गया था और उसने अच्छी तरह से उस गुफानुमा खोह का निरीक्षण कर लिया था। उसने वहाँ उगनेवाले एक छोटे-से पौधे को पहचान लिया था। वह एक नन्हा-सा पौधा था, जिसकी पत्तियाँ एक सिक्के जितनी चौड़ी थीं।

"अब मेरी बारी है साँप महाराज। आप ज़रा देर के लिए पीछे घूम जाने का कष्ट करेंगे और तीन तक गिनती करेंगे? जब आप तीन पर आएँ तो मुझे खोजना शुरू करना। मैं ग़ायब हो चुकी होऊँगी।"

और हुआ भी ठीक वही। साँप ने झट कहा, "एक...दो...तीन!" और घूम गया। उसका बड़ा-सा मुँह खुला का खुला ही रह गया। आश्चर्य! वहाँ तो कोई भी नहीं था। उसने ऊपर-नीचे चारों ओर देखा, ओने-कोने छान मारे, उस पौधे का निरीक्षण किया अपनी जीभ से। मगर सब व्यर्थ। मधुमक्खी तो वाक़ई ग़ायब हो गई थी।

तब साँप को यक़ीन हुआ कि यदि उसका लट्टूवाला करतब अच्छा था तो मधुमक्खी का करतब तो लाजवाब था। किया क्या था उसने? आख़िर थी कहाँ वह?

उसे ढूँढ़ निकालने की तो कोई तरकीब ही नहीं थी।

"चलो!" वह बोला, "मैंने हार मान ली। कहाँ हो?"

एक हल्की-सी आवाज़ सुनाई पड़ी, वह मधुमक्खी की ही थी और खोह के बीचोंबीच से आ रही थी।

"तुम मुझे कुछ करोगे तो नहीं?" उसने पूछा, "क्या मैं तुम्हारी बात का यक़ीन कर सकती हूँ?"

"हाँ।" साँप ने जवाब दिया, "मैं वादा करता हूँ। पर तुम हो कहाँ?"

"यहाँ।" कह वह धीरे से उस नन्हे पौधे की एक बंद पत्ती के भीतर से निकल आई।

ये हुआ क्या था? बड़ी ही सीधी-सी बात थी। जिस नन्हे पौधे की हम बात रहे हैं, वह छुईमुई का पौधा था। जो कि बुएनोस आइरेस में भी पाया जाता है, और उसमें ख़ास बात यह है कि वह हल्की-सी छुअन से भी अपनी पत्तियाँ बंद कर लेता है। अंतर बस यही है कि यह कहानी मिसिओनेस की है, जहाँ बहुत घने जंगल होते हैं और इसलिए छुइमुई के पत्ते भी बड़े-बड़े होते हैं। इसलिए मधुमक्खी के छूने भर से ही पत्तियाँ बंद हो गईं और वह उनके भीतर पूरी तरह से छिप गई।

साँप की बुद्धि में कभी यह बात आई ही नहीं, लेकिन मधुमक्खी ने पौधे को पहचान लिया था और अपनी जान बचाने के लिए उसने इस ज्ञान का फ़ायदा भी उठाया था।

साँप कुछ बोला तो नहीं, लेकिन अपनी हार से वह चिढ़ ज़रूर गया। वह इतना चिढ़ गया कि मधुमक्खी को सारी रात अपने शत्रु को याद दिलाते रहना पड़ा कि उसने उसे एक वादा किया था, जो कि उसे निभाना होगा।

वह एक लंबी अंतहीन रात थी, जो कि उन दोनों ने खोह की सबसे ऊँची दीवार से लगकर काटी, क्योंकि तूफ़ान इतना बढ़ गया था कि पानी नदी की तरह भीतर बह रहा था।

ठंड भी बहुत थी और घुप अँधेरा था भीतर। रह-रहकर साँप का जी करता था कि वह मधुमक्खी पर झपटे और तब बेचारी को लगता था कि अब उसके जीवन का अंत आ गया है।

मधुमक्खी को लगता कि कभी कोई रात इतनी सर्द, इतनी लंबी और ऐसी भयावह हो ही नहीं सकती थी। उसे अपनी बीती ज़िन्दगी याद आती, जब वह रात भर छत्ते के नर्म-गर्म आराम में सोया करती थी। तब वह यह सोच चुपचाप अकेली रोने लगती।

जब दिन निकला, तब सूरज चमकने लगा। मौसम सँभल चुका था। मधुमक्खी उड़ निकली और फिर चुपचाप रोती हुई उस छत्ते के दरवाज़े तक आ गई, जिसे कि सारे परिवार ने मिलकर मेहनत से बनाया था। पहरे पर तैनात मधुमक्खियों ने उसे बिना कुछ भी कहे अंदर जाने दिया, क्योंकि वे जानती थीं कि वह जो लौटकर आई थी, वह वही घुमक्क्ड़ आलसी मधुमक्खी नहीं, बल्कि ऐसी मधुमक्खी थी, जिसने एक ही रात में जीवन का कठिन पाठ सीख लिया था।

और हुआ भी यही था। उसके बाद किसी भी मधुमक्खी ने इतना रस इकट्ठा कर इतना शहद नहीं बनाया, जितना उसने किया। और जब पतझड़ आया और उसके जीवन के दिन भी पूरे हो गए, तब उसे भी मौक़ा मिला कि वह अपने मरने से पहले उन नन्ही मधुमक्खियों को, जो उसे घेरे रहती थीं, कुछ सिखा सके।

"यह हमारी बुद्धिमानी नहीं, बल्कि हमारा काम है, जो कि हमें मज़बूत बनाता है। मैंने केवल एक बार अपनी बुद्धिमानी से काम लिया और वह भी अपनी जान बचाने के लिए। मुझे तब भी इतनी मेहनत नहीं करनी पड़ी होती, यदि मैंने भी सभी की तरह काम किया होता। मैं यहाँ से वहाँ मँडरा कर भी इतना ही थकती थी, जितना काम करके। मुझमें जिस बात की कमी थी, वह थी कर्मपरायणता की, फ़र्ज़ के बोध की, जो मैंने उस भयानक रात सीख लिया।

"तो बहनो, ख़ूब काम करो और हमेशा यह ध्यान में रखो कि हमारी मेहनत का नतीजा है, सभी की ख़ुशी–जो कि एक अकेले की थकान से कहीं बड़ी है। इसी को आदमी आदर्श कहते हैं। यह सही भी है, क्योंकि आदमियों और मधुमक्खियों के जीवन का दूसरा कोई अर्थ नहीं हैं।"

❑

देश परिचय
उरुगुवाई

उरुगुवाई दक्षिण अमरीकी महाद्वीप के दक्षिण पूर्व में स्थित एक देश है, जिसकी ज
40 लाख है।

उरुगुवाई के उत्तर में ब्राज़ील, पश्चिम में उरुगुवाई नदी के पार अर्जेण्टीना और दक्षि
महासागर स्थित हैं। दक्षिण अमरीकी महाद्वीप के सबसे छोटे देशों में इसका नाम दूसरे
है। उरुगुवाई छोटी पहाड़ियों, उपजाऊ तटवर्ती मैदान व बहुत-सी नदियों का देश है।

इस देश की राजधानी मोन्तेविदेओ है। सन 1828 में तीन देशों–स्पेन, अर्जेण्टीना
हुए युद्ध के बाद उरुगुवाई को स्पेन के शासन से आज़ादी मिली। उरुगुवाई अब एक





ओरासियो किरोगा (1878-1937) उरुगुवाई के श्रेष्ठतम लेखकों में से एक हैं। उन्हें कथा-सम्राट माना जाता है। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं— *कुएन्तोस दे आमोर दे लोकूरा इ दे मुएर्ते, आनाकोण्डा, एल देसिएर्तो* और *लोस देसतर्रादोस*। वे दक्षिण अमरीका के पहले ऐसे लेखक थे, जिन्होंने बच्चों के लिए कहानियाँ लिखीं।

इस पुस्तक के भूमिका लेखक **लेओनार्दो गारेत** (जन्म : 1949, साल्तो, उरुगुवाई) श्रेष्ठ कवि, कथाकार और आलोचक हैं। आप उरुगुवाई साहित्य-संस्कृति के एक विशिष्ट प्रतिनिधि हैं। ओरासियो किरोगा पर आपका गहन अध्ययन विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

इस पुस्तक के चित्रकार **नेल्सन रोमेरो** उरुगुवाई के कला आंदोलन की उन प्रतिभाओं में एक हैं, जिन्होंने अपनी परिष्कृत रचनाओं की अभिव्यक्ति को दुनिया के विभिन्न देशों तक पहुँचाया। जो चित्रकृतियाँ प्रस्तुत कथा-संग्रह में हैं, उनकी रचना विशेषकर इस हिन्दी अनुवाद के लिए ही की गई है।

इस पुस्तक की हिन्दी अनुवादिका **प्रीति पंत** (जन्म : 1979, देहरादून) ने तीनों महत्त्वपूर्ण भाषाओं—स्पानी, अंग्रेज़ी एवं हिन्दी में अपना योगदान किया है और अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में विशेष रुचि रखते हुए भाषागत अनुवाद और संबंधित क्षेत्रों में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। लेखिका एवं कवयित्री होने के साथ-साथ अभिनय के क्षेत्र में इन्होंने बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। संप्रति आप हरियाणा राज्य के बी.पी.एस. महिला विश्वविद्यालय में स्पानी भाषा की व्याख्याता हैं।



ISBN 978-81-260-2555-8
9788126025558
मूल्य : 40 रुपये

साहित्य